SANKALP PRAKASHAN

खेल-खेल में भाषा सीखें



डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

ISBN: 978-81-23010-01-8

पुस्तक का नाम

खेल-खेल में भाषा सीखें

लेखक

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

प्रकाशक:

संकल्प प्रकाशन

वर्ष 2018

मुद्रक:

साक्षी ऑफसेट, कानपुर

KHEL-KHEL MEIN BHASHA SEEKHEN

By: Dr. Suresh Kumar Mishra 'Uratript' Price: 220/-

भूमिका

शिक्षण प्रक्रिया का मूल उद्देश्य और शैक्षिक दर्शन

प्रस्तुत 100 गतिविधियों का संग्रह भाषा शिक्षण की पारंपरिक सीमाओं को तोड़कर शिक्षकों को **सक्रिय, रचनात्मक और छात्र-केंद्रित** शिक्षण विधियों से परिचित कराता है। यह मात्र क्रियाकलापों की सूची नहीं है, बल्कि यह **भाषा शिक्षण के प्रति एक समग्र और अनुभवात्मक दृष्टिकोण** का प्रतिनिधित्व करती है। भाषा केवल व्याकरण के नियमों या रटने तक सीमित नहीं है; यह **अभिव्यक्ति, चिंतन और संस्कृति** का माध्यम है। इन गतिविधियों का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षकों को विविध उपकरण प्रदान करना है ताकि वे अपनी **कक्षाओं को जीवंत, संवादपूर्ण और समावेशी** बना सकें। शिक्षण प्रक्रिया का यह अभिनव डिजाइन शिक्षकों को यह सिखाता है कि कैसे हर कक्षा एक **प्रयोगशाला** है, जहाँ भाषा का अधिगम **वास्तविक उपयोग और संदर्भों** में भागीदारी से होता है, और गलतियाँ सीखने की प्रक्रिया का अपरिहार्य हिस्सा हैं।

भाषा के एकीकृत कौशल विकास का सिद्धांत

इन 100 गतिविधियों का ढाँचा भाषा के चारों मूलभूत कौशलों—**सुनना (श्रवण), बोलना (मौखिक अभिव्यक्ति), पढ़ना (पठन), और लिखना (लेखन)**—के **एकीकरण (Integration)** के सिद्धांत पर आधारित है। अक्सर देखा जाता है कि कक्षा शिक्षण में इन कौशलों को अलग-अलग करके पढ़ाया जाता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया कृत्रिम हो जाती है। हमारा यह संग्रह, जैसे 'कहानी पूरी करना' या 'सुनकर चित्र बनाना' जैसी गतिविधियाँ, यह दर्शाती हैं कि ये कौशल एक-दूसरे पर कैसे निर्भर करते हैं। 'श्रवण और उच्चारण' खंड की गतिविधियाँ इस बात पर ज़ोर देती हैं कि **सटीक सुनना ही स्पष्ट बोलने की नींव** है, जबकि 'पठन और लेखन' खंड की गतिविधियाँ **विचारों को ग्रहण करने और उन्हें व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत** करने की क्षमता को एक साथ विकसित करती हैं। यह एकीकृत उपागम सुनिश्चित करता है कि छात्र भाषा को एक **संपूर्ण संचार प्रणाली** के रूप में आत्मसात करें, न कि केवल पाठ्यपुस्तक के हिस्सों के रूप में।

सक्रिय शिक्षण और अनुभवात्मक अधिगम का महत्व

इन 100 गतिविधियों में **निष्क्रिय शिक्षण** के विपरीत **सक्रिय शिक्षण (Active Learning)** पर विशेष बल दिया गया है, जहाँ छात्रों को केवल सुनने के बजाय **सीखने की प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल** किया जाता है। 'करके सीखना' (Learning by Doing) या **अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning)** का सिद्धांत शिक्षकों को यह सिखाता है कि छात्रों को 'शब्दों की माला' या 'जंबल्ड सेंटेंस' जैसी गतिविधियों में शामिल करके उनकी चुनौतियों और आनंद को कैसे महसूस कराया जाए। यह दृष्टिकोण शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में इन तकनीकों को प्रभावी ढंग से लागू करने का **व्यावहारिक तरीका** प्रदान करता है। इन गतिविधियों का सहभागी प्रारूप छात्रों के बीच **आपसी सहयोग, समस्या-समाधान और रचनात्मक संवाद** को बढ़ावा देता है, जिससे कक्षा का वातावरण सीखने और विचारों के सहज आदान-प्रदान के लिए अनुकूल बनता है।

श्रवण और उच्चारण कौशल का निखार (गतिविधियाँ 1-15)

श्रवण कौशल (Listening) को कक्षा में सबसे अधिक अनदेखा किया जाता है, जबकि यह **प्रभावी संचार की आधारशिला** है। 'कहाँ से आई आवाज़?' या 'गलतियाँ ढूँढना' जैसी गतिविधियाँ शिक्षकों को न केवल ध्वनियों और शब्दों पर ध्यान केंद्रित करना सिखाती हैं, बल्कि **आलोचनात्मक श्रवण** (Critical Listening) के कौशल को भी छात्रों में विकसित करने का तरीका बताती हैं। इसी प्रकार, उच्चारण (Pronunciation) का अभ्यास, जैसे 'विपरीत उच्चारण' या 'उच्चारण अभ्यास', छात्रों को **आत्मविश्वास के साथ और स्पष्टता** से बोलने के लिए तैयार करता है। ये अभ्यास शिक्षकों को यह समझने में मदद करते हैं कि 'टीपीआर' (Total Physical Response) जैसी विधियाँ छात्रों को शारीरिक क्रिया के माध्यम से भाषा से कैसे जोड़ती हैं, जिससे **प्राथमिक स्तर पर भाषा का अधिग्रहण** अधिक स्वाभाविक और आनंददायक होता है।

मौखिक अभिव्यक्ति में प्रवाह और आत्मविश्वास (गतिविधियाँ 16-35)

मौखिक अभिव्यक्ति (Speaking) का मुख्य उद्देश्य छात्रों में **बोलने का संकोच** दूर करना और उन्हें विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम बनाना है। 'रोल-प्ले', 'बहस', और 'साक्षात्कार' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को **वास्तविक जीवन के संदर्भ** देती हैं, जहाँ वे **संप्रेषण की प्रभावशीलता** पर ध्यान

केंद्रित करते हुए भाषा का उपयोग करते हैं। 'त्वरित भाषण' और 'कहानी पूरी करना' जैसी तकनीकें शिक्षकों को यह सिखाती हैं कि कैसे छात्रों को **तत्काल प्रतिक्रिया** देने और **बिना तैयारी के सोचने** (Thinking and Speaking on the spot) के कौशल को प्रोत्साहित किया जाए। ये गतिविधियाँ कक्षा को एक ऐसा मंच बनाती हैं जहाँ छात्र **औपचारिक, अनौपचारिक और भावनात्मक** तीनों तरह की भाषा का प्रयोग कर सकते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और प्रवाह बढ़ता है।

पठन कौशल में गहन समझ और आलोचनात्मकता (गतिविधियाँ 36-50)

पठन कौशल केवल शब्दों को पहचानने या सस्वर पाठ करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें **गहन समझ, विश्लेषण और मूल्यांकन** शामिल है। 'मौन पठन और सारांश' तथा 'पाठ की जाँच' जैसी गतिविधियाँ शिक्षकों को पठन की **गति और गहराई** (Skimming and Scanning) दोनों को सिखाने की तकनीक प्रदान करती हैं। 'अर्थ का अनुमान' और 'पात्र विश्लेषण' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को **उच्च-क्रम चिंतन** (Higher-Order Thinking) की ओर ले जाती हैं, जहाँ वे शब्दों के शाब्दिक अर्थ से परे जाकर लेखक के **इरादे और निहितार्थ** को समझते हैं। 'जंबल्ड सेंटेंस' और 'विभिन्न प्रकार की सामग्री पढ़ना' शिक्षकों को यह दिखाते हैं कि कैसे वाक्य संरचना और लेखन शैली के आधार पर विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री (जैसे विज्ञापन, रिपोर्ट, कविता) का विश्लेषण और शिक्षण किया जाता है।

लेखन कौशल में सृजनशीलता और व्याकरणिक सटीकता (गतिविधियाँ 51-65)

लेखन (Writing) कौशल **सटीक व्याकरण, विचारों की सुसंगतता और रचनात्मकता** की मांग करता है। इस खंड की गतिविधियों में 'पत्र लेखन', 'रिपोर्ट लेखन' और 'संवाद लेखन' जैसे **व्यावहारिक प्रारूपों** के साथ-साथ 'छह शब्द की कहानी' और 'कविता/हाइकू लेखन' जैसी **कल्पनाशील अभिव्यक्तियाँ** भी शामिल हैं। 'त्रुटि सुधार' और 'स्व-सुधार' जैसी गतिविधियाँ शिक्षकों को यह सिखाती हैं कि छात्रों में **आत्मानुशासन** और अपने लेखन की **आलोचनात्मक जाँच** की आदत कैसे विकसित की जाए। लेखन का यह समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि छात्र न केवल सही व्याकरण और वर्तनी का उपयोग करें, बल्कि अपने विचारों को प्रभावशाली, संगठित और उद्देश्यपूर्ण तरीके से प्रस्तुत भी करें।

व्याकरण और शब्दावली का प्रभावी और प्रासंगिक अभ्यास (गतिविधियाँ 66-80)

इन गतिविधियों का उद्देश्य व्याकरण को बोझिल विषय बनाने के बजाय, इसे **इंटरैक्टिव और प्रासंगिक** बनाना है। 'शब्दों की माला', 'शब्द जाल', और 'विलोम शब्द की प्रतियोगिता' शब्दावली को खेल-खेल में सीखने का अवसर प्रदान करते हैं। 'कारक/विभक्ति कार्ड खेल' और 'क्रिया का सही रूप' जैसी गतिविधियाँ व्याकरण को **वाक्य संरचना** से जोड़कर सिखाती हैं। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि शिक्षक नियमों को अमूर्त रूप से न पढ़ाएँ, बल्कि छात्रों को **भाषा के उपयोग** के माध्यम से नियम की पहचान करने (Inductive Method) का मौका दें। 'मुहावरे और लोकोक्तियाँ' और 'युग्म शब्द' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को भाषा की **सांस्कृतिक और भावनात्मक गहराई** से जोड़ती हैं, जिससे उनकी अभिव्यक्ति समृद्ध होती है और शब्दावली का विस्तार होता है।

रचनात्मकता, संस्कृति और नवाचार का एकीकरण (गतिविधियाँ 81-100)

यह अंतिम खंड भाषा को व्यापक सांस्कृतिक और शैक्षिक परिदृश्य से जोड़ता है। 'बाल साहित्य बनाना', 'लोक कथाओं का अनुवाद' और 'सांस्कृतिक उत्सव की योजना' जैसी गतिविधियाँ शिक्षकों को भाषा को **संस्कृति के वाहक** के रूप में देखने और **सांस्कृतिक संवेदना** विकसित करने में मदद करती हैं। 'पॉडकास्ट बनाना', 'इंटरनेट संसाधनों का उपयोग' और 'भाषा खेल बनाना' जैसी गतिविधियाँ शिक्षकों को यह सिखाती हैं कि **तकनीक और नवाचार** को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कैसे एकीकृत किया जाए। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि शिक्षक 21वीं सदी के कौशलों के साथ तालमेल बिठाएँ और छात्रों को **वास्तविक दुनिया** के कार्यों के लिए तैयार करें, जहाँ भाषा का अभ्यास एक रचनात्मक और रोमांचक खोज बन जाता है।

निष्कर्ष और शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन

संक्षेप में, यह 100 गतिविधियों का संग्रह एक **शक्तिशाली, व्यापक और व्यावहारिक मार्गदर्शिका** है जो शिक्षकों को भाषा शिक्षण के लिए एक **ठोस आधार** प्रदान करता है। इन गतिविधियों के माध्यम से, हमारा उद्देश्य शिक्षकों को केवल एक उपकरण सेट प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें भाषा को **संप्रेषण के एक शक्तिशाली साधन** के रूप में देखने के लिए प्रेरित करना है। इस शिक्षण दर्शन का केंद्रीय विचार यह है कि कक्षा में **जुड़ाव, आनंद और सार्थक संप्रेषण** का वातावरण तैयार हो। इन विधियों

को कक्षा में लागू करने से शिक्षण शैली में **स्थायी और सकारात्मक बदलाव** आएगा, जिससे अंततः छात्रों की भाषाई क्षमता, रचनात्मकता और आत्मविश्वास में अभूतपूर्व वृद्धि होगी।

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
प्रसिद्ध भाषाविद् व साहित्यकार

विषयसूची

I. श्रवण (Listening) और उच्चारण (Pronunciation) गतिविधियाँ

भाषा शिक्षण में श्रवण और उच्चारण की आधारभूत भूमिका

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में श्रवण (सुनना) और उच्चारण (बोलना) दो ऐसे आधारभूत कौशल हैं जिन पर संपूर्ण संप्रेषण की इमारत खड़ी होती है। दुर्भाग्यवश, पारंपरिक कक्षाओं में इन दोनों कौशलों को अक्सर पठन और लेखन के पक्ष में उपेक्षित कर दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप छात्र भाषा की व्याकरणिक संरचना को तो समझ लेते हैं, लेकिन वास्तविक जीवन के संदर्भों में उसे प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाते। एक प्रभावी भाषा कार्यक्रम को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्रों को न केवल ध्वनियों और शब्दों को सही ढंग से सुनने और पहचानने का अभ्यास मिले, बल्कि वे उन ध्वनियों और शब्दों को शुद्ध और प्रवाहमय तरीके से अभिव्यक्त भी कर सकें। इन गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य छात्रों में आलोचनात्मक श्रवण (Critical Listening) की क्षमता विकसित करना है, जिससे वे बोले गए पाठ के अर्थ, इरादे और भावनात्मक स्वर को पहचान सकें। यह एक निर्विवाद सत्य है कि जिस सटीकता से हम सुनते हैं, उसी सटीकता से हम भाषा को ग्रहण करते और अंततः उसका उत्पादन करते हैं। इसलिए, इन 100 गतिविधियों के पहले खंड को श्रवण और उच्चारण पर केंद्रित करना भाषा शिक्षण के लिए एक अत्यंत विवेकपूर्ण और आवश्यक कदम है, जो छात्रों को वास्तविक दुनिया के भाषाई संवादों के लिए तैयार करता है।

श्रवण कौशल का विकास केवल passive (निष्क्रिय) क्रिया नहीं है, बल्कि यह एक सक्रिय, एकाग्रतापूर्ण और विश्लेषणात्मक प्रक्रिया है। 'कहाँ से आई आवाज़?' या 'एक मिनट का मौन' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को सिखाती हैं कि वे बाहरी और आंतरिक विकर्षणों (Distractions) के बीच भी ध्वनियों पर कैसे ध्यान केंद्रित करें। ये अभ्यास छात्रों की श्रवण-स्मृति (Auditory Memory) और ध्वनि पहचान क्षमता को सशक्त करते हैं, जो किसी भी नई भाषा को सीखने के लिए अनिवार्य है। जब छात्र जानबूझकर 'गलतियाँ ढूँढना' जैसी गतिविधि में व्याकरणिक या उच्चारण संबंधी त्रुटियों को पहचानते हैं, तो वे भाषा की बारीकियों के प्रति अधिक जागरूक होते हैं। यह जागरूकता उन्हें अपनी स्वयं की भाषा के

उत्पादन (उत्सर्जन) में स्वतः सुधार करने के लिए प्रेरित करती है। इसके अतिरिक्त, श्रवण गतिविधियों को पहेलियों (Riddles) और कहानी के क्रम (Story Sequencing) से जोड़ना यह सुनिश्चित करता है कि छात्र केवल ध्वनियों को नहीं सुन रहे हैं, बल्कि वे सुने गए पाठ का विश्लेषण करके तार्किक अनुमान लगा रहे हैं और जानकारी को व्यवस्थित कर रहे हैं। यह आलोचनात्मक श्रवण कौशल उन्हें केवल भाषा सीखने में ही नहीं, बल्कि शैक्षणिक और सामाजिक जीवन में भी सूचनाओं का प्रभावी ढंग से मूल्यांकन करने में मदद करता है।

उच्चारण कौशल का सीधा संबंध आत्मविश्वास और संप्रेषण की प्रभावशीलता से है। खराब उच्चारण के कारण छात्र अक्सर बोलने से हिचकिचाते हैं, जिससे उनका मौखिक अभ्यास रुक जाता है और उनका भाषाई विकास प्रभावित होता है। इसलिए, 'उच्चारण अभ्यास' और 'विपरीत उच्चारण' जैसी गतिविधियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती हैं। 'विपरीत उच्चारण' (Minimal Pair Practice) छात्रों को उन सूक्ष्म ध्वनि अंतरों को समझने में मदद करता है जो एक ही भाषा में दो अलग-अलग शब्दों (जैसे 'ताल' और 'थाल') का निर्माण करते हैं, और जो संप्रेषण में अर्थ का स्पष्टीकरण सुनिश्चित करते हैं। 'टंग ट्विस्टर्स' का उपयोग करना उच्चारण को मनोरंजक बनाता है और छात्रों को तेज़ गति से, स्पष्ट और ध्वन्यात्मक रूप से जटिल शब्दों को बोलने का अभ्यास देता है। यह अभ्यास बोलने में प्रवाह (Fluency) को बढ़ाता है और भाषा को स्वाभाविक गति से उपयोग करने की क्षमता विकसित करता है। शिक्षक के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि उच्चारण सिखाते समय भाषा के लय (Rhythm), स्वर (Tone) और लहजे (Intonation) पर भी ध्यान केंद्रित किया जाए, क्योंकि ये तत्व बोले गए संदेश के भावनात्मक और सामाजिक अर्थ को व्यक्त करते हैं, जैसा कि 'संवाद रिकॉर्डिंग विश्लेषण' में किया जाता है।

श्रवण और उच्चारण को प्रभावी ढंग से विकसित करने का एक शक्तिशाली तरीका है 'टोटल फिजिकल रिस्पांस' (TPR) का उपयोग, जैसा कि 'निर्देशों का पालन' गतिविधि में दर्शाया गया है। टीपीआर एक ऐसी विधि है जहाँ छात्र भाषा को केवल सुनते नहीं हैं, बल्कि शारीरिक क्रिया के माध्यम से प्रतिक्रिया देते हैं। यह विशेष रूप से शुरुआती स्तर के छात्रों के लिए प्रभावी है क्योंकि यह भाषा को शारीरिक स्मृति से जोड़ता है, जिससे वे व्याकरण या अनुवाद पर ध्यान केंद्रित किए बिना ही प्राकृतिक तरीके से शब्दों और क्रियाओं के बीच संबंध स्थापित कर लेते हैं। शिक्षक सरल आदेशों (जैसे 'खड़े हो जाओ', 'किताब उठाओ') का उपयोग करते हैं, और छात्र उनका पालन करते हैं, जिससे श्रवण समझ का तत्काल और सहज सत्यापन

होता है। यह गतिविधि कक्षा के वातावरण को तनावमुक्त और गतिशील बनाती है, जो भाषा सीखने के लिए अनुकूल है। टीपीआर छात्रों को भाषा के उपयोग के साथ जुड़ाव और आनंद का अनुभव कराता है, जिससे उनकी भागीदारी और सीखने की इच्छा बढ़ती है।

इन गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक आधार संदर्भ-आधारित अधिगम (Context-Based Learning) है। 'गीत या कविता में खाली जगह भरना' या 'फोन कॉल रोल-प्ले' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को भाषा को अलगाव में नहीं, बल्कि अर्थपूर्ण संदर्भों में सुनने और उपयोग करने के लिए प्रेरित करती हैं। फोन कॉल रोल-प्ले एक उत्कृष्ट अभ्यास है क्योंकि इसमें छात्र दृश्य संकेतों (Visual Cues) पर निर्भर नहीं रह सकते, जिससे उनका श्रवण कौशल और स्पष्ट उच्चारण ही सफल संप्रेषण का एकमात्र माध्यम बनता है। इसी तरह, 'कहानी सुनना और क्रम बताना' गतिविधि में, छात्र कहानी के तार्किक प्रवाह को समझने के लिए सक्रिय रूप से सुनते हैं और फिर उस जानकारी को सही क्रम में व्यवस्थित करते हैं। यह न केवल उनकी श्रवण समझ (Comprehension) को बढ़ाता है, बल्कि उनकी तार्किक और संगठनात्मक सोच (Organizational Thinking) को भी विकसित करता है।

शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) के रूप में ऑडियो और विज़ुअल साधनों का उपयोग इन कौशलों को बढ़ाने के लिए अपरिहार्य है। 'समाचार बुलेटिन का सारांश' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को वास्तविक जीवन के बोलने की गति और लहजे से परिचित कराती हैं। यह उन्हें शिक्षण सामग्री से परे जाकर, भाषा के वास्तविक और जटिल उपयोग को समझने का अवसर देती है। जब शिक्षक 'सुनकर चित्र बनाना' जैसी गतिविधियों में दृश्य और श्रवण कौशल को मिलाते हैं, तो वे छात्रों की विभिन्न सीखने की शैलियों (Learning Styles) को समायोजित करते हैं। यह मल्टी-मोडल (Multi-Modal) दृष्टिकोण सीखने को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाता है। इसके अतिरिक्त, 'संवाद रिकॉर्डिंग विश्लेषण' छात्रों को बोले गए शब्दों के अलावा वक्ता के हाव-भाव, मनोदशा और सामाजिक इरादे को समझने के लिए लहजे (Intonation) जैसे गैर-शाब्दिक संकेतों पर ध्यान केंद्रित करना सिखाता है।

इन गतिविधियों के माध्यम से छात्रों में आत्म-सुधार (Self-Correction) की आदत विकसित की जाती है। 'गलतियाँ ढूँढना' गतिविधि में, छात्र सक्रिय रूप से गलतियाँ खोजते हैं, जिससे वे भाषा के सही रूप (Correct Form) की ओर उन्मुख होते हैं। जब छात्र अपने सहपाठियों के उच्चारण पर ध्यान देते हैं या 'गॉसिप गेम' में विकृत सूचना को सही करने का प्रयास करते हैं, तो वे समस्या-समाधान और

आलोचनात्मक विश्लेषण का अभ्यास करते हैं। यह सहकर्मी शिक्षण (Peer Learning) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहाँ छात्र एक-दूसरे की गलतियों से सीखते हैं। यह प्रक्रिया छात्रों को भाषा के प्रति एक खोजी और जिज्ञासु दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है, जो उन्हें लंबे समय तक सीखने में सहायता करता है।

इन गतिविधियों की सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक यह है कि वे कक्षा के वातावरण को तनावमुक्त और भयमुक्त बनाती हैं। जब भाषा सीखना खेलों, पहेलियों और इंटरैक्टिव अभ्यासों के माध्यम से होता है, तो छात्र गलती करने के डर को छोड़ देते हैं। 'शब्दों की माला' या 'पहेलियाँ/बुझौवल' जैसे खेल छात्रों को अनायास और सहज रूप से बोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि मौखिक अभ्यास एक दंडात्मक कार्य न होकर, आनंददायक और स्वैच्छिक गतिविधि बन जाए। एक भयमुक्त वातावरण में ही छात्र नए शब्दों और उच्चारणों को बिना किसी झिझक के प्रयोग करने की हिम्मत जुटा पाते हैं, जो भाषा में प्रवाह (Fluency) विकसित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संक्षेप में, श्रवण और उच्चारण की ये 15 गतिविधियाँ भाषा शिक्षण के लिए एक समग्र और गतिशील आधार प्रस्तुत करती हैं। वे केवल दो अलग-अलग कौशल नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं, जो इनपुट (सुनना) और आउटपुट (बोलना) के बीच एक आवश्यक कड़ी बनाते हैं। ये विधियाँ शिक्षकों को उपकरण प्रदान करती हैं ताकि वे छात्रों की सुनने की क्षमता को तेज़ और आलोचनात्मक बना सकें और उनके उच्चारण को स्पष्ट और आत्मविश्वासपूर्ण बना सकें। इन अभ्यासों का नियमित समावेश छात्रों की भाषाई यात्रा को अधिक प्रभावी, इंटरैक्टिव और अंततः अधिक सफल बनाता है, क्योंकि यह उन्हें जीवन भर के लिए एक मजबूत संचार क्षमता प्रदान करता है।

अतः, इन 100 गतिविधियों के संग्रह में श्रवण और उच्चारण को प्राथमिकता देना यह दर्शाता है कि शिक्षण प्रक्रिया मूलभूत संचार कौशल को सर्वोच्च महत्व देती है, जो छात्रों को केवल कक्षा में ही नहीं, बल्कि सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में भी अपनी बात सही ढंग से समझने और प्रस्तुत करने में सक्षम बनाएगी। यह भाषा शिक्षण के उद्देश्य-केंद्रित और परिणाम-उन्मुख दृष्टिकोण का एक स्पष्ट प्रमाण है।

श्रवण (Listening) और उच्चारण (Pronunciation) गतिविधियाँ

1. "कहाँ से आई आवाज़?" (Sound Source Identification): अलग-अलग आवाज़ों को पहचानना और उनके बारे में बोलना।
2. सुनकर चित्र बनाना (Listen and Draw): शिक्षक वर्णन करते हैं और अध्यापक सुनकर चित्र बनाते हैं।
3. निर्देशों का पालन (Following Instructions - TPR): सरल आदेशों का पालन करना (जैसे 'उठो', 'बैठो', 'हाथ ऊपर करो')।
4. कहानी सुनना और क्रम बताना (Story Sequencing): कहानी सुनकर घटनाओं को सही क्रम में लगाना।
5. गलतियाँ ढूँढना (Spot the Mistake): शिक्षक कुछ बोलते हैं जिसमें व्याकरण या उच्चारण की गलती होती है, अध्यापकों को वह गलती पहचाननी होती है।
6. पहेलियाँ/बुझौवल (Riddles): एक-दूसरे को पहेलियाँ सुनाना और बूझना।
7. गीत या कविता में खाली जगह भरना (Gap Fill in Song/Poem): गीत/कविता सुनकर छूटे हुए शब्दों को लिखना।
8. उच्चारण अभ्यास (Pronunciation Drills): कठिन शब्दों और 'टंग ट्विस्टर्स' (Tongue Twisters) का अभ्यास।
9. 'एक मिनट का मौन' (One Minute of Silence): कमरे में सुनकर आने वाली आवाज़ों को नोट करना और फिर उन पर चर्चा करना।
10. संवाद रिकॉर्डिंग विश्लेषण (Dialogue Analysis): पूर्व-रिकॉर्डेड संवाद सुनना और उसकी भाषा की बारीकियों पर चर्चा करना।
11. शब्दावली सुनकर दोहराना (Listen and Repeat Vocabulary): नए शब्दों को सही उच्चारण के साथ दोहराना।
12. फोन कॉल रोल-प्ले (Phone Call Role-Play): फोन पर बात करने का अभ्यास, जिसमें केवल आवाज़ पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

13. समाचार बुलेटिन का सारांश (News Summary): छोटा समाचार बुलेटिन सुनकर उसका सार बताना।
14. विपरीत उच्चारण (Minimal Pair Practice): मिलते-जुलते उच्चारण वाले शब्दों का अभ्यास (जैसे: 'चाल' और 'छाल')।
15. ध्वन्यात्मकता (Phonetics) का खेल: शब्दों को सुनकर उनकी पहली ध्वनि या अंतिम ध्वनि पहचानना।

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
1.	"कहाँ से आई आवाज़?" (Sound Source Identification)	यह गतिविधि अध्यापकों को ध्यान से सुनने के कौशल को बेहतर बनाने में मदद करती है। शिक्षक आँखें बंद करके कोई आवाज़ निकालते हैं (जैसे ताली बजाना, कागज़ फाड़ना, घंटी बजाना) या कक्षा में पहले से रिकॉर्ड की गई विभिन्न आवाज़ें चलाते हैं। अध्यापकों को उस आवाज़ को पहचानना और उसे नाम देना होता है।	शिक्षक: (छिपकर) एक मेज़ को खटखटाते हैं। अध्यापक 1: "यह लकड़ी की दस्तक की आवाज़ है।" अध्यापक 2: "लगता है किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।"

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
2.	सुनकर चित्र बनाना (Listen and Draw)	यह सुनने की समझ (Comprehension) और निर्देशों का पालन करने की क्षमता को परखने का एक रचनात्मक तरीका है। शिक्षक एक चित्र का विस्तार से वर्णन करते हैं, और अध्यापकों को बिना देखे, केवल सुनकर, उस चित्र को अपनी कॉपी में बनाना होता है।	शिक्षक: "कागज़ के बीच में एक बड़ा त्रिकोण बनाओ। त्रिकोण के ऊपर दाएँ कोने में एक छोटा गोला बनाओ। गोले के नीचे, त्रिकोण के बाईं ओर एक सीधी रेखा खींचो।"
3.	निर्देशों का पालन (TPR) (Total Physical Response)	यह विधि भाषा को शारीरिक क्रिया से जोड़ती है। शिक्षक लक्षित भाषा में सरल आदेश देते हैं, और अध्यापकों को तुरंत उन आदेशों का पालन करना होता है। यह अध्यापकों को बाद में अपनी कक्षा में छोटे बच्चों के साथ उपयोग करने के लिए तैयार करता है।	शिक्षक: "अपनी जगह पर खड़े हो जाइए।" "बाएँ मुड़िए।" "किताब को मेज़ पर रख दीजिए।" "अपने कान को छूकर दिखाइए।"

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
4.	कहानी सुनना और क्रम बताना (Story Sequencing)	यह गतिविधि श्रवण के साथ-साथ समझ और तार्किक क्रम को समझने पर केंद्रित है। शिक्षक एक छोटी कहानी (4-5 वाक्यों वाली) सुनाते हैं। अध्यापकों को उस कहानी के मुख्य वाक्यों या घटनाओं को अलग-अलग पर्चियों पर लिखकर/उन्हें दिए गए पर्चियों को सही क्रम में व्यवस्थित करना होता है।	शिक्षक: (कहानी सुनाते हैं) 1. रवि बाज़ार गया। 2. उसने ताज़े फल खरीदे। 3. घर आकर उसने फलों को टोकरी में रखा। 4. शाम को सबने मिलकर फल खाए। अध्यापकों को इन चारों वाक्यों को सही क्रम में जमाना है।
5.	गलतियाँ ढूँढना (Spot the Mistake)	यह गतिविधि व्याकरण और उच्चारण की बारीकियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए है। शिक्षक जानबूझकर व्याकरण की गलतियों वाले वाक्य बोलते हैं या किसी शब्द का ग़लत उच्चारण करते हैं। अध्यापकों को गलती	शिक्षक: "संगीता खाना खाता है।" अध्यापक: "गलती है। सही होगा: संगीता खाना खाती है।" शिक्षक: (शब्द का ग़लत उच्चारण करते हैं, जैसे 'शिक्षक' को 'सीछक') अध्यापक: "आपने 'शिक्षक' का उच्चारण

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		पहचाननी होती है और उसे सुधारना होता है।	ग़लत किया। सही उच्चारण 'शि-क्षक' है।"
6.	पहेलियाँ/बुझौवल (Riddles)	यह सुनने के कौशल के साथ-साथ शब्दावली और तार्किक अनुमान को भी बढ़ाती है। शिक्षक या एक अध्यापक पहेली बोलता है, और दूसरे अध्यापक सुनकर उसका उत्तर देते हैं। यह पहेलियाँ भाषा के नियमों या सांस्कृतिक ज्ञान पर आधारित हो सकती हैं।	पहेली: "बिन पानी का जंगल है, जिसमें पेड़ कम हैं, पत्ते ज़्यादा।" उत्तर: किताब/पुस्तकालय।
7.	गीत या कविता में खाली जगह भरना (Gap Fill in Song/Poem)	यह गतिविधि ध्यानपूर्वक सुनने और संदर्भ में सही शब्द को पहचानने के लिए है। गीत या कविता का एक अंश लिखा हुआ दिया जाता है, जिसमें कुछ शब्द गायब होते हैं। अध्यापक इसे सुनकर उन खाली जगहों को भरते हैं।	वाक्य: "चिड़िया ( )** करती है, कोयल ( )** गाती है।" (उत्तर: चहचहा, मीठा)

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
8.	उच्चारण अभ्यास (Pronunciation Drills)	यह गतिविधि ध्वनियों (Sounds) के सही उत्पादन और भाषा के प्रवाह (Rhythm) को सुधारने के लिए है। शिक्षक कठिन शब्दों, वाक्यांशों या टंग ट्विस्टर्स (Tongue Twisters) को दोहराते हैं, और अध्यापक भी उनका सही उच्चारण करते हुए दोहराते हैं।	अभ्यास: टंग ट्विस्टर: "चंदू के चाचा ने, चंदू की चाची को, चाँदनी चौक में, चाँदी के चम्मच से चटनी चटाई।"
9.	'एक मिनट का मौन' (One Minute of Silence)	यह सुनने पर गहन ध्यान केंद्रित करने की क्षमता विकसित करती है। अध्यापकों को एक मिनट के लिए चुपचाप बैठने और कमरे के अंदर और बाहर की सभी आवाज़ों को नोट करने को कहा जाता है। फिर वे सुनी हुई आवाज़ों को साझा करते हैं।	सुनी हुई आवाज़ें: पंखे की गुनगुनाहट, दूर किसी के बात करने की आवाज़, दरवाज़े की चरमराहट, पेन की टिक-टिक।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
10.	संवाद रिकॉर्डिंग विश्लेषण (Dialogue Analysis)	यह गतिविधि वास्तविक भाषा (Authentic Language) के उपयोग, बोलने के लहज़े (Intonation) और सामाजिक संदर्भ को समझने के लिए है। एक छोटा रिकॉर्डेड संवाद सुनाया जाता है, और अध्यापकों को उस संवाद के उद्देश्य, वक्ताओं के रिश्ते और टोकने के तरीके पर चर्चा करनी होती है।	प्रश्न: "वक्ता किस मनोदशा में थे (खुश/गुस्से में)? 'अच्छा!' शब्द का उपयोग किस भावना को व्यक्त करने के लिए किया गया?"
11.	शब्दावली सुनकर दोहराना (Listen and Repeat Vocabulary)	यह गतिविधि नए शब्दों को उनके सही उच्चारण के साथ तुरंत सीखने के लिए है। शिक्षक नए या कठिन शब्दावली को बोलते हैं, और अध्यापक तुरंत सही उच्चारण और लय के साथ उसे दोहराते हैं।	शब्द सूची: "सृजनात्मकता," "अभिव्यक्ति," "बहुआयामी," "सुदृढ़ता।" (प्रत्येक शब्द को स्पष्ट रूप से 3 बार दोहराना)।

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
12.	फोन कॉल रोल-प्ले (Phone Call Role-Play)	इस रोल-प्ले में, अध्यापक एक-दूसरे को देख नहीं सकते, इसलिए वे केवल सुनने के कौशल और स्पष्ट उच्चारण पर निर्भर रहते हैं। एक काल्पनिक फ़ोन कॉल की स्थिति दी जाती है, और अध्यापक केवल आवाज़ का उपयोग करके संवाद करते हैं।	स्थिति: एक छात्र के माता-पिता का फ़ोन आया है, जो अपने बच्चे की कमज़ोर प्रगति पर चर्चा करना चाहते हैं।
13.	समाचार बुलेटिन का सारांश (News Summary)	यह गतिविधि लंबी सामग्री को सुनने और उसके मुख्य बिंदुओं को पहचानने के कौशल को बढ़ाती है। एक छोटा (2 मिनट का) समाचार बुलेटिन सुनाया जाता है। अध्यापकों को उसे सुनकर 3-4 मुख्य बिंदु लिखने होते हैं और फिर उन पर संक्षिप्त चर्चा करनी होती है।	कार्य: बुलेटिन सुनकर निम्न का पता लगाएँ: मुख्य घटना, स्थान, प्रभावित लोग, अगला कदम।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
14.	विपरीत उच्चारण (Minimal Pair Practice)	यह गतिविधि उन ध्वनियों के बीच अंतर को समझने के लिए है जो एक-दूसरे से बहुत मिलती-जुलती हैं, जिससे अर्थ बदल जाता है। शिक्षक ऐसे शब्दों के जोड़े का उच्चारण करते हैं, और अध्यापकों को यह पहचानना होता है कि वे किस शब्द की बात कर रहे हैं (जैसे 'चाल' या 'छाल')।	शब्द जोड़े: 'थाल' - 'ताल', 'काल' - 'खाल', 'दिन' - 'दीन', 'बड़ा' - 'भला'।
15.	ध्वन्यात्मकता (Phonetics) का खेल	यह गतिविधि शब्दों की ध्वनियों और उनके अक्षरों के बीच के संबंध को समझने में मदद करती है। शिक्षक कोई शब्द बोलते हैं, और अध्यापकों को उस शब्द के पहले अक्षर की ध्वनि से शुरू होने वाले और शब्द बोलने होते हैं।	शिक्षक: "कमल"। अध्यापक: कागज़, किताब, काला, कबूतर।

II. मौखिक अभिव्यक्ति (Speaking) गतिविधियाँ

मौखिक अभिव्यक्ति, या बोलना, भाषा शिक्षण का सबसे गतिशील और महत्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि यह भाषा के उत्पादन (Production) और वास्तविक संचार का प्राथमिक माध्यम है। एक छात्र की भाषाई क्षमता का आकलन अक्सर उसकी मौखिक अभिव्यक्ति के प्रवाह, आत्मविश्वास और सटीकता से किया जाता है। सफल भाषा अधिगम का अर्थ केवल व्याकरण के नियमों को जानना नहीं है, बल्कि उन नियमों का उपयोग करके विचारों, भावनाओं और सूचनाओं का आदान-प्रदान करना है। इसलिए, मौखिक अभिव्यक्ति की गतिविधियाँ कक्षा को एक ऐसी जगह बनाती हैं जहाँ छात्र भयमुक्त होकर संवाद कर सकें, गलतियाँ कर सकें और उन गलतियों से सीख सकें। इन 100 गतिविधियों के संग्रह में मौखिक अभिव्यक्ति के लिए समर्पित खंड, शिक्षण को पाठ्यपुस्तक से निकालकर वास्तविक दुनिया के अनुभवों से जोड़ता है। इसका उद्देश्य छात्रों को न केवल व्याकरणिक रूप से सही बोलना सिखाना है, बल्कि उन्हें सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में उपयुक्त और प्रभावी ढंग से बोलना भी सिखाना है, जिससे उनका आत्मविश्वास और संचार कौशल दोनों विकसित हों।

मौखिक अभिव्यक्ति की गतिविधियों का प्राथमिक शैक्षणिक लक्ष्य छात्रों के संकोच (Inhibition) को तोड़ना है। कई छात्र भाषा को समझते हैं और लिख सकते हैं, लेकिन कक्षा में या सार्वजनिक रूप से बोलने से डरते हैं, मुख्यतः गलती करने के डर से। रोल-प्ले/नाटकीयकरण और संवाद जैसी गतिविधियाँ इस संकोच को दूर करने का सबसे प्रभावी तरीका हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों को एक काल्पनिक चरित्र या स्थिति के पीछे छिपने का अवसर देती हैं, जिससे वे अपनी गलतियों के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार महसूस नहीं करते। रोल-प्ले वास्तविक जीवन की स्थितियों (जैसे बाज़ार में मोल-भाव, डॉक्टर से अपॉइंटमेंट लेना) का अनुकरण करता है, जो छात्रों को सिखाता है कि औपचारिक और अनौपचारिक भाषा का प्रयोग कब और कैसे करना है। यह व्यावहारिक अभ्यास उन्हें केवल शब्द नहीं, बल्कि हाव-भाव, आवाज़ का उतार-चढ़ाव (Intonation) और शरीर की भाषा (Body Language) का उपयोग करना भी सिखाता है, जो प्रभावी संचार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

मौखिक अभिव्यक्ति में प्रवाह (Fluency) विकसित करने के लिए तत्काल सोचने और बोलने (Thinking on the spot) का अभ्यास आवश्यक है। त्वरित भाषण (Impromptu Speaking) और

कहानी पूरी करना (Complete the Story) जैसी गतिविधियाँ छात्रों को बिना पूर्व तैयारी के अपने विचारों को व्यवस्थित करने और उन्हें तार्किक क्रम में प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करती हैं। 'कहानी पूरी करना' में, प्रत्येक छात्र को कहानी में एक नया वाक्य जोड़ना होता है, जिससे कल्पना शक्ति और विचारों के प्रवाह का निरंतर अभ्यास होता है, साथ ही यह सुनिश्चित होता है कि छात्र पिछले वक्ता की बात को ध्यान से सुन रहे हैं। त्वरित भाषण छात्रों को किसी भी विषय पर संरचित रूप से बोलना सिखाता है, चाहे उनके पास विषय पर कितना ही सीमित ज्ञान क्यों न हो। यह अभ्यास छात्रों को वास्तविक जीवन की उन स्थितियों के लिए तैयार करता है जहाँ उन्हें अचानक, बिना तैयारी के अपने विचार व्यक्त करने पड़ते हैं।

समूह चर्चा (Group Discussion) और बहस/वाद-विवाद (Debate) मौखिक कौशल को उच्चतम स्तर तक ले जाते हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों को आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), तार्किक तर्क (Logical Reasoning) और विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति सिखाती हैं। समूह चर्चा एक अनौपचारिक सेटिंग प्रदान करती है जहाँ छात्र विचारों का आदान-प्रदान करना, दूसरे की बात धैर्य से सुनना और विनम्रता से असहमति व्यक्त करना सीखते हैं। इसके विपरीत, वाद-विवाद एक औपचारिक संरचना प्रदान करता है, जहाँ छात्रों को अपने तर्कों को ठोस साक्ष्यों और प्रभावशाली शब्दावली के साथ प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। यह उन्हें सिखाता है कि पक्ष और विपक्ष दोनों के दृष्टिकोणों को कैसे समझा जाए और प्रभावी ढंग से खंडन कैसे किया जाए। ये दोनों गतिविधियाँ छात्रों में जटिल और अमूर्त विचारों को लक्षित भाषा में व्यक्त करने की क्षमता विकसित करती हैं।

मौखिक अभिव्यक्ति की गतिविधियाँ शब्दावली और व्याकरण के अभ्यास को भी संदर्भ के साथ जोड़ती हैं। चित्र वर्णन (Picture Description) जैसी गतिविधियाँ छात्रों को विशेषणों, क्रिया-विशेषणों और पूर्वसर्गों (Prepositions) का उपयोग करके विस्तृत, विवरणात्मक भाषा का प्रयोग करने के लिए मजबूर करती हैं। जब छात्र किसी दृश्य का वर्णन करते हैं, तो उन्हें सटीक और रंगीन शब्दों का चयन करना होता है, जिससे उनकी शब्दावली स्वतः समृद्ध होती है। इसी प्रकार, 'कारण बताओ' और 'अगर मैं होता...' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को कारण-परिणाम बताने वाले वाक्यांशों, सशर्त वाक्यों (Conditional Sentences) और भविष्य काल की क्रियाओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित करती हैं। ये अभ्यास यह सुनिश्चित करते हैं कि व्याकरण केवल नियम न रहे, बल्कि अर्थपूर्ण और कार्यात्मक उपकरण बन जाए, जिसका उपयोग वे अपनी बात को अधिक प्रभावी ढंग से कहने के लिए कर सकें।

प्रश्नोत्तर और जानकारी का आदान-प्रदान मौखिक कौशल का एक अपरिहार्य हिस्सा है। साक्षात्कार (Interview) और परिचय सत्र (Ice-breaker) जैसी गतिविधियाँ छात्रों को प्रश्न पूछने और उत्तर देने के कौशल में निपुण बनाती हैं। साक्षात्कार में, छात्र न केवल प्रश्न पूछते हैं, बल्कि उन्हें सुनने के आधार पर अनुवर्ती प्रश्न (Follow-up Questions) तैयार करने पड़ते हैं, जो उनकी श्रवण समझ और त्वरित भाषाई प्रतिक्रिया दोनों को बढ़ाता है। परिचय सत्र, जैसे कि अपने नाम के पहले अक्षर से शुरू होने वाले विशेषण का उपयोग करना, कक्षा में एक सकारात्मक और जुड़ा हुआ माहौल बनाता है और छात्रों को अपनी और दूसरों की पहचान को भाषाई रूप से व्यक्त करने का अभ्यास देता है।

कक्षा को गतिशील और आकर्षक बनाए रखने के लिए मौखिक खेल (Speaking Games) का उपयोग महत्वपूर्ण है। 'गॉसिप गेम' या 'जंजीर खेल' (Chain Game) जैसे खेल छात्रों को ध्यानपूर्वक सुनने और सुनी हुई सूचना को सटीक रूप से दोहराने के लिए मजबूर करते हैं। 'गॉसिप गेम' (या टेलीफ़ोन गेम) विशेष रूप से मनोरंजक होता है क्योंकि यह दिखाता है कि सूचना कैसे विकृत हो सकती है, जिससे छात्रों को स्पष्ट उच्चारण और सही शब्द चयन के महत्व का पता चलता है। 'जंजीर खेल' छात्रों को व्याकरणिक रूप से सही वाक्य बनाने और उन्हें दोहराने के लिए मजबूर करता है, जिससे उनकी स्मृति और वाक्य-संरचना का अभ्यास होता है। ये खेल भाषा के अभ्यास को एक प्रतिस्पर्धी और मजेदार गतिविधि बनाते हैं, जिससे छात्रों की भागीदारी का स्तर स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है।

एक अध्यापक के रूप में, इन गतिविधियों का उपयोग केवल छात्रों को बोलने देने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें प्रतिक्रिया (Feedback) और प्रोत्साहन भी शामिल होना चाहिए। एक प्रभावी अध्यापक मौखिक अभिव्यक्ति के दौरान छात्रों की गलतियों को तुरंत ठीक करने (Instant Correction) से बचता है, क्योंकि इससे प्रवाह बाधित होता है और संकोच बढ़ता है। इसके बजाय, शिक्षक को गलतियों को नोट करना चाहिए और गतिविधि के बाद रचनात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए। प्रतिक्रिया में न केवल सुधार के बिंदु होने चाहिए, बल्कि छात्रों को उनके प्रवाह, आत्मविश्वास और सही व्याकरणिक प्रयोग के लिए सकारात्मक प्रोत्साहन भी मिलना चाहिए। 'सलाह देना' जैसी गतिविधियाँ शिक्षकों को यह सिखाती हैं कि कैसे छात्रों को संरचनात्मक और विनम्र भाषा का उपयोग करके प्रतिक्रिया और सुझाव देना सिखाया जाए।

मौखिक अभिव्यक्ति का विकास छात्रों को वास्तविक जीवन की स्थितियों में भाषा का उपयोग करने के लिए तैयार करता है। 'निर्देश देना' (Giving Directions) या 'विज्ञापन बनाना' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को व्यावहारिक और उद्देश्यपूर्ण भाषा का उपयोग करने के लिए प्रेरित करती हैं। निर्देश देने के लिए सटीक शब्दावली और स्पष्ट उच्चारण की आवश्यकता होती है, जबकि विज्ञापन बनाने के लिए प्रेरक और आकर्षक भाषा का उपयोग करना होता है। इन गतिविधियों के माध्यम से, छात्र सीखते हैं कि वे अपनी भाषा कौशल का उपयोग सूचना देने, प्रभावित करने या किसी कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए कैसे कर सकते हैं। यह परिणाम-उन्मुख शिक्षण सुनिश्चित करता है कि छात्र भाषा को एक अमूर्त विषय नहीं, बल्कि एक आवश्यक जीवन कौशल मानते हैं।

निष्कर्ष रूप में, मौखिक अभिव्यक्ति की ये गतिविधियाँ भाषा शिक्षण के हृदय में स्थित हैं। वे छात्रों को संप्रेषण में निपुण, आत्मविश्वास से भरपूर और सांस्कृतिक रूप से जागरूक वक्ता बनाने की दिशा में एक व्यापक और व्यावहारिक रोडमैप प्रदान करती हैं। इन गतिविधियों का सफल कार्यान्वयन कक्षा के वातावरण को सहयोगी, सक्रिय और ऊर्जावान बनाता है, जहाँ छात्र डर के बजाय आनंद और उत्साह के साथ भाषा का प्रयोग करते हैं। यह दृष्टिकोण अंततः छात्रों को उनकी शैक्षिक और व्यावसायिक यात्रा में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक संप्रेषण शक्ति से लैस करता है।

मौखिक अभिव्यक्ति (Speaking) गतिविधियाँ

16. रोल-प्ले/नाटकीयकरण (Role-Plays/Dramatisation): विभिन्न स्थितियों पर आधारित भूमिका निभाना (बाज़ार, डॉक्टर-मरीज, आदि)।
17. बहस/वाद-विवाद (Debate): किसी विषय पर पक्ष और विपक्ष में तर्क-वितर्क करना।
18. समूह चर्चा (Group Discussion): किसी विषय पर छोटे समूहों में विचार-विमर्श करना।
19. चित्र वर्णन (Picture Description): एक चित्र देखकर उसका विस्तार से मौखिक वर्णन करना।
20. कहानी पूरी करना (Complete the Story): एक अध्यापक कहानी शुरू करते हैं, और दूसरे अध्यापक उसे आगे बढ़ाते हैं।
21. प्रस्तुति (Presentation): किसी भी विषय पर एक छोटी मौखिक प्रस्तुति देना।

22. 'मैं कौन हूँ?' (Who Am I?): एक व्यक्ति कोई चरित्र या वस्तु बनता है, और बाकी लोग प्रश्न पूछकर पहचानते हैं।
23. त्वरित भाषण (Impromptu Speaking): बिना तैयारी के किसी विषय पर तुरंत बोलना।
24. साक्षात्कार (Interview): एक-दूसरे का या किसी काल्पनिक व्यक्ति का साक्षात्कार लेना।
25. 'कारण बताओ' (Give Reasons): किसी काल्पनिक घटना के होने के कारणों पर चर्चा करना।
26. सलाह देना (Giving Advice): किसी काल्पनिक समस्या पर सलाह देना।
27. 'अगर मैं होता...' (If I Were...): किसी पद या परिस्थिति में होने पर अपनी प्रतिक्रिया बताना।
28. निर्देश देना (Giving Directions): किसी स्थान तक पहुँचने का रास्ता बताना।
29. विज्ञापन बनाना (Creating an Advertisement): किसी उत्पाद का मौखिक विज्ञापन तैयार करना और प्रस्तुत करना।
30. 'गॉसिप गेम' (The Gossip Game): एक अध्यापक एक वाक्य फुसफुसाते हैं, जो क्रम से आगे बढ़ता है और अंतिम व्यक्ति ज़ोर से बोलता है।
31. अपरिचित वस्तु पर बात करना (Talking about an Unfamiliar Object): एक वस्तु दिखाकर उसके उपयोग, रूप-रंग पर चर्चा करना।
32. भविष्य की योजनाएँ (Future Plans): अगले सप्ताह/साल की योजनाओं के बारे में बताना।
33. परिचय सत्र (Ice-breaker): रचनात्मक तरीके से अपना परिचय देना।
34. जंजीर खेल (Chain Game): एक शब्द से शुरू करके अगले व्यक्ति को उससे संबंधित नया वाक्य बोलना।
35. कविता पाठ (Poetry Recitation): एक कविता को उचित हाव-भाव और लय के साथ पढ़ना।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
16.	रोल-प्ले/नाटकीयकरण (Role-Plays/Dramatisation)	यह गतिविधि वास्तविक जीवन के संदर्भों में भाषा का उपयोग करने और बोलने का संकोच दूर करने के लिए है। अध्यापकों को दो-दो के समूह में किसी स्थिति पर संवाद तैयार करके प्रस्तुत करना होता है। यह अभिनय और हाव-भाव पर भी ज़ोर देता है।	स्थिति: बस अड्डे पर दो अजनबी आपस में बात कर रहे हैं। अध्यापक 1: "माफ़ कीजिए, क्या आप जानते हैं कि दिल्ली जाने वाली बस कब आएगी?" अध्यापक 2: "लगभग आधे घंटे में। क्या आप पहली बार यहाँ आए हैं?"
17.	बहस/वाद-विवाद (Debate)	यह तर्क-क्षमता, विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने और जटिल शब्दावली का उपयोग करने का अभ्यास है। एक विषय दिया जाता है, और अध्यापकों के समूह पक्ष और विपक्ष में तर्क प्रस्तुत	विषय: "क्या स्कूलों में तकनीक (टेक्नोलॉजी) का उपयोग बच्चों के लिए लाभदायक है?" पक्ष समूह: "हाँ, यह सीखने को रोचक बनाता है।" विपक्ष समूह: "नहीं,

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
		करते हैं। यह औपचारिक भाषा का अभ्यास है।	यह बच्चों का ध्यान भटकाता है।"
18.	समूह चर्चा (Group Discussion)	यह एक अनौपचारिक सेटिंग में विचारों का आदान-प्रदान करने, दूसरे की बात सुनने और अपनी राय व्यक्त करने का कौशल विकसित करती है। 4-6 अध्यापकों का एक समूह किसी सामयिक या शैक्षिक विषय पर चर्चा करता है।	विषय: "कक्षा में अनुशासन कैसे बनाए रखा जाए?" चर्चा बिंदु: सज़ा देना या सकारात्मक प्रोत्साहन? सहपाठी की सहायता लेना? बच्चों से ही नियम बनवाना?
19.	चित्र वर्णन (Picture Description)	यह गतिविधि विशेषणों (Adjectives), क्रिया-विशेषणों (Adverbs) और वाक्य-संरचना का अभ्यास करवाती है। शिक्षक एक विस्तृत चित्र दिखाते हैं, और	चित्र: एक पार्क, जहाँ बच्चे खेल रहे हैं। वर्णन: "यह एक सुंदर, हरा-भरा पार्क है। एक छोटा बच्चा ख़ुशी से गेंद से खेल रहा है। बड़ा भूरा कुत्ता तेज़ी से घास पर दौड़ रहा है।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		अध्यापकों को उस चित्र में जो कुछ भी दिख रहा है, उसका विस्तार से वर्णन करना होता है।	
20.	कहानी पूरी करना (Complete the Story)	यह कल्पना शक्ति और विचारों के प्रवाह को प्रोत्साहित करती है। शिक्षक कहानी का एक छोटा-सा हिस्सा बोलकर रुक जाते हैं। क्रम से प्रत्येक अध्यापक को कहानी में एक-दो वाक्य जोड़कर उसे आगे बढ़ाना होता है।	शिक्षक: "एक बार की बात है, जंगल के पास एक छोटा-सा घर था। एक दिन, अचानक आसमान से नीली रोशनी गिरी..." अध्यापक 1: "...और उस नीली रोशनी से एक अजीब जानवर बाहर निकला।" अध्यापक 2: "वह जानवर बहुत डरा हुआ लग रहा था, इसलिए मैंने उसे खाने को दिया।"
21.	प्रस्तुति (Presentation)	यह किसी विषय पर जानकारी व्यवस्थित करने	विषय: "भाषा शिक्षण में कहानियों का महत्व।"

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
		और आत्मविश्वास के साथ बोलने का कौशल विकसित करती है। अध्यापकों को पहले से दिए गए (या मौके पर दिए गए) विषय पर 3-5 मिनट की मौखिक प्रस्तुति देनी होती है।	मुख्य बिंदु: बच्चों को आकर्षित करना, नैतिक शिक्षा देना, कल्पना शक्ति का विकास।
22.	'मैं कौन हूँ?' (Who Am I?)	यह शब्दावली, प्रश्न पूछने की क्षमता और वर्णनात्मक भाषा (Descriptive Language) का अभ्यास है। एक अध्यापक कोई चरित्र, ऐतिहासिक व्यक्ति या वस्तु बनता है। बाकी लोग 'हाँ/नहीं' में जवाब वाले प्रश्न पूछकर उसे पहचानते हैं।	अध्यापक (मन में): मैं हूँ 'गांधी जी'। प्रश्न 1: "क्या आप जीवित हैं?" प्रश्न 2: "क्या आपने देश की आज़ादी में योगदान दिया?"

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
23.	त्वरित भाषण (Impromptu Speaking)	यह सोचने और तुरंत बोलने (Thinking on the spot) के कौशल को विकसित करती है। अध्यापक को एक विषय या शब्द दिया जाता है, और उसे बिना तैयारी के तुरंत 1-2 मिनट तक उस पर बोलना होता है।	विषय: "आज की सुबह की सबसे अच्छी बात"। (अध्यापक तुरंत बोलना शुरू करते हैं।)
24.	साक्षात्कार (Interview)	यह प्रश्न पूछने (Questioning) और जानकारी देने (Giving Information) के कौशल का अभ्यास है। अध्यापक जोड़ी बनाते हैं। एक रिपोर्टर बनता है और दूसरा कोई विशिष्ट व्यक्ति (जैसे, एक सफल लेखक	रिपोर्टर: "आप अपनी सफलता का श्रेय किसे देते हैं?" लेखक: "मैं इसका श्रेय मेरे पाठकों के प्यार और मेरी माँ को देता हूँ।"

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		या एक नए स्कूल का प्रिंसिपल)।	
25.	'कारण बताओ' (Give Reasons)	यह कारण और परिणाम (Cause and Effect) बताने वाली भाषा का अभ्यास है। एक काल्पनिक घटना दी जाती है, और अध्यापकों को उस घटना के होने के तार्किक कारण बताने होते हैं।	घटना: "कल स्कूल जल्दी बंद हो गया था।" संभावित कारण: अचानक बारिश, प्रिंसिपल को कहीं जाना था, शहर में कोई उत्सव था।
26.	सलाह देना (Giving Advice)	यह सलाह देने वाले वाक्यांशों (जैसे 'तुम्हें चाहिए', 'बेहतर होगा कि') और समस्या-समाधान (Problem-solving) की भाषा का अभ्यास है। एक अध्यापक एक काल्पनिक	समस्या: "मेरा छात्र लिखने से डरता है।" सलाह: "आपको उसे रचनात्मक लेखन के लिए प्रेरित करना चाहिए। रोज़ डायरी लिखने के लिए कहें।"

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
		समस्या बताता है, और दूसरा उसे सलाह देता है।	
27.	'अगर मैं होता...' (If I Were...)	यह काल्पनिक स्थितियाँ (Hypothetical Situations) और सशर्त वाक्यों (Conditional Sentences) का उपयोग करने का अभ्यास है। अध्यापकों को एक काल्पनिक पद या परिस्थिति दी जाती है।	स्थिति: "अगर मैं देश का शिक्षा मंत्री होता/होती..."। जवाब: "तो मैं स्कूलों में खेल और कला को अनिवार्य कर देता/देती।"
28.	निर्देश देना (Giving Directions)	यह स्पष्ट और सटीक भाषा, दिशासूचक शब्दों (Directional Words) और स्थान से संबंधित शब्दावली का अभ्यास है। एक अध्यापक को नक्शा या गंतव्य दिया जाता है, और उसे दूसरे	कार्य: "बस स्टॉप से बाज़ार तक का रास्ता बताइए।" निर्देश: "सीधे जाइए, फिर दाएँ मुड़िए, तीसरी दुकान के पास।"

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		अध्यापक को वहाँ तक पहुँचने का रास्ता समझाना होता है।	
29.	विज्ञापन बनाना (Creating an Advertisement)	यह आकर्षक और प्रेरक भाषा (Persuasive Language) का अभ्यास है। अध्यापकों के समूह को किसी उत्पाद या सेवा (जैसे 'अच्छे अध्यापक बनने का कोर्स') का मौखिक विज्ञापन तैयार करना और उसे ऊँचे स्वर में प्रस्तुत करना होता है।	विज्ञापन की टैगलाइन: **"अब पढ़ाना हुआ आसान! जुड़िए हमारे 5 दिन के 'स्मार्ट टीचिंग' कोर्स से!"
30.	'गॉसिप गेम' (The Gossip Game)	यह सुनने और दोहराने (Listening and Repeating) के कौशल को मज़बूत करती है। अध्यापकों की एक लाइन बनाई जाती है। पहले	मूल वाक्य: "प्रिंसिपल सर ने कहा कि कल स्कूल की छुट्टी होगी, लेकिन केवल स्टाफ के लिए।" (देखें कि अंतिम

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		व्यक्ति एक लंबा वाक्य दूसरे के कान में फुसफुसाते हैं। अंतिम व्यक्ति ज़ोर से बोलता है कि उसने क्या सुना। यह सूचना के विकृत होने को दर्शाता है।	व्यक्ति तक क्या पहुँचता है)।
31.	अपरिचित वस्तु पर बात करना (Talking about an Unfamiliar Object)	यह विवरणात्मक शब्दावली और कल्पनाशील भाषा का प्रयोग करने का अभ्यास है। शिक्षक एक अपरिचित वस्तु दिखाते हैं (या एक अजीबोगरीब नाम देते हैं), और अध्यापकों को उसके उपयोग, रंग, बनावट पर बात करनी होती है।	वस्तु: एक 'ट्रिंग-ट्रिंग डिब्बा'। प्रश्न: "यह किस लिए उपयोग होता होगा? इसकी विशेषताएँ क्या हैं?"
32.	भविष्य की योजनाएँ (Future Plans)	यह भविष्य काल (Future Tense) की	वाक्य: "अगले साल मैं बच्चों को कहानी सुनाने

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		क्रियाओं और इच्छाओं/आशाओं को व्यक्त करने वाली शब्दावली का अभ्यास है। अध्यापक अपने अगले सप्ताह या अगले साल की शैक्षिक योजनाओं के बारे में बात करते हैं।	का एक नया तरीका सीखूँगा/सीखूँगी।"
33.	परिचय सत्र (Ice-breaker)	यह कार्यशाला की शुरुआत में संकोच दूर करने और एक-दूसरे को जानने के लिए एक मजेदार तरीका है। हर अध्यापक को अपने नाम के पहले अक्षर से शुरू होने वाले विशेषण का उपयोग करते हुए अपना परिचय देना होता है।	उदाहरण: "कुशल कमलेश हूँ, और मैं यहाँ भाषा सीखने आया हूँ।"

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
34.	श्रृंखला खेल (Chain Game)	यह शब्दावली और वाक्य-रचना को सुधारने के लिए है। पहला अध्यापक एक वाक्य बोलता है, और अगला अध्यापक पहले वाले वाक्य को दोहराता है और उसमें एक नया वाक्य जोड़ता है।	अध्यापक 1: "आज मैंने एक नई कलम खरीदी।" अध्यापक 2: "आज मैंने एक नई कलम खरीदी और उससे एक पत्र लिखा।"
35.	कविता पाठ (Poetry Recitation)	यह सही उच्चारण, लय, ठहराव और भावों के साथ बोलने के कौशल का अभ्यास है। अध्यापक किसी कविता या छोटी रचना को हाव-भाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ प्रस्तुत करते हैं।	कार्य: "बच्चों की कोई एक लोकप्रिय कविता (जैसे 'मछली जल की रानी है') को अभिनय के साथ प्रस्तुत करें।"

III. पठन (Reading) गतिविधियाँ

पठन (Reading) कौशल को प्रायः भाषा सीखने के सभी कौशलों की आधारशिला माना जाता है। यह वह माध्यम है जिसके द्वारा छात्र लिखित भाषा के विशाल भंडार तक पहुँच बनाते हैं, शब्दावली अर्जित करते हैं, व्याकरण की संरचनाओं को स्वाभाविक रूप से आत्मसात करते हैं और ज्ञान तथा सूचना की दुनिया में प्रवेश करते हैं। पठन केवल मुद्रित या डिजिटल प्रतीकों को ध्वनि में बदलने की प्रक्रिया नहीं है; यह एक सक्रिय, अर्थ-निर्माणकारी प्रक्रिया है जिसमें पाठक को लेखक के इरादे, विषय वस्तु और अंतर्निहित संदेश को समझने के लिए आलोचनात्मक रूप से संलग्न होना पड़ता है। इन 100 गतिविधियों के संग्रह में पठन कौशल के लिए समर्पित खंड का उद्देश्य छात्रों की पठन क्षमता को मात्र सस्वर पठन (Loud Reading) से ऊपर उठाकर गहन समझ (Deep Comprehension), आलोचनात्मक विश्लेषण और पठन की गति (Reading Speed) तक ले जाना है। प्रभावी पठन गतिविधियाँ कक्षा को एक ऐसी जगह बनाती हैं जहाँ छात्र विभिन्न प्रकार की लेखन शैलियों (Genres) और सामग्रियों के साथ आत्मविश्वास से बातचीत कर सकें, जिससे उनका बौद्धिक क्षितिज व्यापक हो सके।

पठन कौशल के विकास में पठन के प्रकार (Types of Reading) को समझना और उन पर अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। इन गतिविधियों में मौन पठन और सारांश (Silent Reading and Summary) पर विशेष बल दिया गया है, जो तेज़ गति से पढ़ने (Skimming) और मुख्य विचारों को पहचानने (Gist Comprehension) के कौशल को विकसित करता है। मौन पठन छात्रों को बिना उच्चारण की चिंता किए, सीधे अर्थ और विचार पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है। 'शीर्षक ढूँढना' (Finding the Title) जैसी गतिविधियाँ छात्रों को सिखाती हैं कि कैसे एक पाठ के केंद्रीय विचार को संक्षेप में और प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया जाए। इसके विपरीत, 'पाठ की जाँच' (Scanning) का उद्देश्य छात्रों को तेजी से पढ़ने और पाठ में विशिष्ट जानकारी (जैसे नाम, तारीख या तथ्य) को खोजने के लिए प्रशिक्षित करना है। ये दोनों विधियाँ—स्कीमिंग और स्कैनिंग—छात्रों को अकादमिक और पेशेवर जीवन दोनों में सूचना के प्रभावी प्रबंधन के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करती हैं।

पठन का एक और महत्वपूर्ण आयाम समझ और तार्किक संगठन है। 'जंबल्ड सेंटेंस' और 'पैराग्राफ काटना' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को वाक्य और अनुच्छेद के तार्किक क्रम तथा व्याकरणिक संरचना को

समझने के लिए मजबूर करती हैं। 'जंबल्ड सेंटेंस' छात्रों को दिखाता है कि कैसे शब्द एक तार्किक और व्याकरणिक रूप से सुसंगत वाक्य बनाने के लिए परस्पर क्रिया करते हैं। वहीं, 'पैराग्राफ काटना' उन्हें यह सिखाता है कि एक सुसंगत पाठ को विचारों के आधार पर तार्किक रूप से कैसे विभाजित किया जाता है और कैसे प्रत्येक अनुच्छेद एक विशिष्ट उप-विषय पर केंद्रित होता है। यह अभ्यास छात्रों की विश्लेषणात्मक क्षमता को बढ़ाता है और उन्हें सुसंगत लेखन के सिद्धांतों को समझने में मदद करता है, जिससे उनके लेखन कौशल में भी सुधार होता है।

शब्दावली का अधिग्रहण पठन कौशल का एक शक्तिशाली उप-उत्पाद है। 'अर्थ का अनुमान' (Guessing Meaning from Context) जैसी गतिविधियाँ छात्रों को सिखाती हैं कि उन्हें हर अपरिचित शब्द के लिए शब्दकोश की ओर भागने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वे आसपास के शब्दों और पूरे संदर्भ का उपयोग करके शब्द के अर्थ का तार्किक अनुमान लगा सकते हैं। यह कौशल न केवल पठन प्रवाह को बनाए रखता है, बल्कि छात्रों को स्वतंत्र शिक्षार्थी (Independent Learners) भी बनाता है। इसके अतिरिक्त, 'विभिन्न प्रकार की सामग्री पढ़ना' (जैसे समाचार कतरन, विज्ञापन, कहानी, निर्देश) छात्रों को यह सिखाता है कि लेखन की शैली, शब्दावली और उद्देश्य सामग्री के प्रकार के अनुसार कैसे बदलते हैं, जिससे वे विभिन्न संदर्भों में भाषा के उपयोग को बेहतर ढंग से समझते हैं।

आलोचनात्मक और गहन पठन (Critical and Intensive Reading) कौशल उच्च शिक्षा और बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक हैं। 'पाठ से प्रश्न बनाना' और 'पात्र विश्लेषण' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को सतह की समझ से आगे जाने के लिए प्रेरित करती हैं। जब छात्र पाठ से प्रश्न बनाते हैं, तो वे सक्रिय रूप से पाठ के अंतर्निहित विचारों और तार्किक कमियों की तलाश करते हैं। 'पात्र विश्लेषण' में, छात्रों को केवल यह जानना नहीं होता कि चरित्र ने क्या किया, बल्कि यह भी समझना होता है कि उसने क्यों किया, चरित्र की प्रेरणाएँ क्या थीं और कहानी में उसकी भूमिका क्या थी। ये गतिविधियाँ छात्रों को पाठ के मूल्यांकन और संश्लेषण की क्षमता प्रदान करती हैं, जिससे वे पाठ के निष्क्रिय उपभोक्ता के बजाय सक्रिय विश्लेषक बन जाते हैं।

पठन शिक्षण में सस्वर पठन (Loud Reading) की अपनी जगह है, बशर्ते इसका उपयोग सही ढंग से किया जाए। 'सस्वर पठन' गतिविधि का उद्देश्य केवल शब्दों को पढ़ना नहीं है, बल्कि सही उच्चारण, स्पष्टता, प्रवाह और सबसे महत्वपूर्ण, विराम-चिह्नों के अनुसार उचित ठहराव (Pause) को समझना है। यह

अभ्यास छात्रों को सिखाता है कि लिखित प्रतीकों को कैसे अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति में परिवर्तित किया जाए। जब एक छात्र विराम चिह्न को नज़रअंदाज़ करता है, तो वाक्य का अर्थ विकृत हो जाता है। सस्वर पठन, यदि सहपाठियों की प्रतिक्रिया के साथ किया जाए, तो छात्रों को उनके उच्चारण की कमियों को दूर करने और श्रोताओं तक अर्थ को प्रभावी ढंग से पहुँचाने में मदद करता है।

कक्षा में पठन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि कौशल का विकास। 'किताब समीक्षा' और 'पठन कोने का निर्माण' जैसी गतिविधियाँ छात्रों में पठन की संस्कृति को बढ़ावा देती हैं। 'किताब समीक्षा' छात्रों को अपने पठन अनुभवों को दूसरों के साथ साझा करने, अपनी राय व्यक्त करने और दूसरों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने का अवसर देती है। यह छात्रों को पठन सामग्री के चयन में आलोचनात्मक होने और अपनी पसंद के लिए तर्क देने का अभ्यास कराती है। 'पठन कोने का निर्माण' गतिविधि एक आकर्षक और प्रेरक पठन वातावरण बनाने की रचनात्मक प्रक्रिया में छात्रों को शामिल करती है, जिससे वे पठन को एक आनंददायक और स्वैच्छिक गतिविधि के रूप में देखते हैं।

पठन की गति और समझ के बीच एक संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। 'रीडिंग रेस' और 'पठन की गति और समझ' जैसी गतिविधियाँ इस संतुलन को परखने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। इन गतिविधियों में, छात्रों को एक निश्चित समय सीमा के भीतर पढ़ना होता है और उसके बाद प्रश्नों का उत्तर देना होता है। यह स्पष्ट करता है कि केवल तेज़ पढ़ना पर्याप्त नहीं है; समझ भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। शिक्षक इन अभ्यासों का उपयोग छात्रों को समय प्रबंधन और उच्च दबाव वाली अकादमिक स्थितियों (जैसे परीक्षा) के लिए तैयार करने में कर सकते हैं, जहाँ उन्हें सीमित समय में बड़ी मात्रा में पाठ को अवशोषित और संसाधित करना होता है।

पठन गतिविधियों के माध्यम से, शिक्षक छात्रों को वास्तविक दुनिया से जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। 'अख़बार की कतरन' (Newspaper Clipping) गतिविधि छात्रों को समसामयिक घटनाओं, सार्वजनिक राय और पत्रकारिता की लेखन शैली से परिचित कराती है। यह उन्हें सिखाती है कि अख़बार की भाषा कैसे साहित्यिक भाषा से अलग होती है और कैसे उन्हें एक संक्षिप्त, तथ्यात्मक पाठ से आवश्यक जानकारी निकालनी होती है। यह अभ्यास छात्रों के सामाजिक और नागरिक ज्ञान को बढ़ाता है और उन्हें सक्रिय और सूचित नागरिक बनने में मदद करता है।

निष्कर्ष रूप में, पठन कौशल का यह संग्रह केवल शिक्षण विधियों का एक समूह नहीं है, बल्कि बौद्धिक विकास का एक व्यापक कार्यक्रम है। 'मौन पठन' से लेकर 'आलोचनात्मक विश्लेषण' तक, ये गतिविधियाँ सुनिश्चित करती हैं कि छात्र पठन के हर आयाम में निपुण हों। यह छात्रों को शब्दावली, व्याकरण और विचारों को प्रभावी ढंग से ग्रहण करने की क्षमता प्रदान करता है। एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई पठन प्रक्रिया छात्रों को न केवल उनकी शैक्षणिक सफलता के लिए तैयार करती है, बल्कि उन्हें जीवन भर सीखने वाले (Lifelong Learners) और दुनिया के साथ सार्थक रूप से जुड़ने वाले सक्षम व्यक्तियों के रूप में भी स्थापित करती है, जहाँ ज्ञान और सूचना की दुनिया तक पहुँच बनाने की कुंजी पठन ही है।

पठन (Reading) गतिविधियाँ

36. मौन पठन और सारांश (Silent Reading and Summary): किसी पाठ को चुपचाप पढ़कर उसका मुख्य विचार बताना।
37. सस्वर पठन (Loud Reading): सही उच्चारण, विराम और प्रवाह के साथ पढ़ना।
38. शीर्षक ढूँढना (Finding the Title): एक बिना शीर्षक वाला पाठ पढ़कर उसके लिए उपयुक्त शीर्षक सुझाना।
39. 'जंबल्ड सेंटेंस' (Jumbled Sentences): वाक्यों के उलटे-पुल्टे अंशों को सही क्रम में जमाना।
40. 'पैराग्राफ काटना' (Cutting Paragraphs): एक लम्बे पाठ को छोटे-छोटे अनुच्छेदों में विभाजित करना और प्रत्येक को एक उपशीर्षक देना।
41. अर्थ का अनुमान (Guessing Meaning from Context): पाठ में रेखांकित अपरिचित शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाना।
42. पाठ से प्रश्न बनाना (Creating Questions from Text): पाठ पढ़कर उस पर आधारित प्रश्न बनाना।
43. पाठ की जाँच (Scanning the Text): किसी विशिष्ट जानकारी (जैसे नाम, तारीख) को पाठ में तेज़ी से ढूँढना।

44. विभिन्न प्रकार की सामग्री पढ़ना (Reading Diverse Material): अखबार, कहानी, निर्देश, विज्ञापन आदि पढ़ना और उनके उद्देश्य पर चर्चा करना।

45. पठन कोने का निर्माण (Creating a Reading Corner): आकर्षक पठन सामग्री का चुनाव और प्रस्तुति।

46. 'रीडिंग रेस' (Reading Race): सबसे पहले एक छोटे पाठ को पढ़कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर देना।

47. अखबार की कतरन (Newspaper Clipping): अखबार की एक कतरन पढ़कर उसके बारे में राय देना।

48. पठन की गति और समझ (Reading Speed and Comprehension): एक निश्चित समय में कितना पढ़ा और कितना समझा, इसका आकलन।

49. किताब समीक्षा (Book Review): पढ़ी हुई किताब की समीक्षा मौखिक या लिखित रूप में देना।

50. पात्र विश्लेषण (Character Analysis): कहानी के पात्रों के गुणों और व्यवहार पर चर्चा करना।

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
36.	मौन पठन और सारांश (Silent Reading and Summary)	इस गतिविधि का उद्देश्य तेज़ गति से पढ़कर उसका मुख्य भाव (gist) या सारांश समझने के कौशल को विकसित करना है। अध्यापक एक लेख को मौन रहकर पढ़ते हैं और फिर बिना देखे उस लेख का सार अपने शब्दों में बताते हैं।	शिक्षक: एक पेज का लेख देते हैं (जैसे पर्यावरण प्रदूषण पर)। कार्य: इसे 5 मिनट में पढ़ें और फिर 2-3 वाक्यों में बताएँ कि लेख का मुख्य विषय क्या था।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
37.	सस्वर पठन (Loud Reading)	यह सही उच्चारण, विराम-चिह्नों का उपयोग और प्रवाह (Fluency) को सुधारने पर केंद्रित है। अध्यापक बारी-बारी से पाठ के एक-एक अनुच्छेद को ज़ोर से पढ़ते हैं, जबकि बाकी लोग उनके उच्चारण और प्रवाह पर ध्यान देते हैं।	कार्य: कविता का एक छंद ज़ोर से पढ़ें। शिक्षक: "देखिए, 'अल्पविराम' (,) पर थोड़ा रुकना है और भावों को आवाज़ में लाना है।"
38.	शीर्षक ढूँढना (Finding the Title)	यह पठन कौशल का अभ्यास है, जहाँ अध्यापकों को लेख के मुख्य विचार (Central Idea) को समझते हुए उसे एक संक्षिप्त नाम देना होता है। एक बिना शीर्षक वाला पाठ दिया जाता है। अध्यापकों को पढ़कर उसके लिए तीन उपयुक्त शीर्षक सुझाने होते हैं।	पाठ का विषय: 'पानी बचाने के तरीके'। सुझाए गए शीर्षक: 1. जल है तो कल है। 2. पानी बचाओ, जीवन बचाओ। 3. एक बूँद का महत्व।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
39.	'जंबल्ड सेंटेंस' (Jumbled Sentences)	यह वाक्य संरचना (Sentence Structure), व्याकरणिक क्रम और तार्किक सोच का अभ्यास है। एक वाक्य के शब्दों को आगे-पीछे करके दिया जाता है। अध्यापकों को उन्हें पढ़कर सही व्याकरणिक क्रम में जमाना होता है।	अव्यवस्थित शब्द: है - पढ़ना - बहुत - हिंदी - सरल। सही वाक्य: हिंदी पढ़ना बहुत सरल है।
40.	'पैराग्राफ काटना' (Cutting Paragraphs)	यह संगठन क्षमता (Organization Skill) और विचारों के वर्गीकरण को बेहतर बनाने के लिए है। एक लंबा, बिना पैराग्राफ में बंटा हुआ पाठ दिया जाता है। अध्यापकों को उस पाठ को तार्किक रूप से छोटे-छोटे अनुच्छेदों में विभाजित करना होता है और हर	पाठ: "जलवायु परिवर्तन के कारण, प्रभाव और समाधान" पर मिश्रित वाक्य। कार्य: 1. कारण (Cause) 2. प्रभाव (Effect) 3. समाधान (Solution) के आधार पर पाठ को तीन हिस्सों में बाँटना।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		अनुच्छेद को एक उपशीर्षक देना होता है।	
41.	अर्थ का अनुमान (Guessing Meaning from Context)	इस गतिविधि में अध्यापकों को पूरे संदर्भ को पढ़कर पाठ में आए किसी अपरिचित शब्द के अर्थ का अनुमान लगाना होता है। यह शब्दावली सीखने की एक महत्वपूर्ण तकनीक है।	वाक्य: "वह इतना परिश्रमी था कि उसने कभी आराम नहीं किया, इसलिए वह सफल रहा।" प्रश्न: 'परिश्रमी' का क्या अर्थ हो सकता है? उत्तर: मेहनती (संदर्भ के अनुसार)।
42.	पाठ से प्रश्न बनाना (Creating Questions from Text)	यह गहन समझ (Deep Comprehension) और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है। अध्यापक पाठ को पढ़ते हैं और फिर उसके आधार पर विभिन्न प्रकार के प्रश्न (जैसे 'कौन', 'क्यों', 'कैसे') बनाते	पाठ: 'सूरजमुखी का फूल दिन भर सूरज की तरफ क्यों देखता है?' कार्य: इस पर तीन प्रश्न बनाइए। (जैसे: सूरजमुखी किस दिशा में मुड़ता है?)

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		हैं, जिनका उत्तर दूसरे समूह को देना होता है।	
43.	पाठ की जाँच (Scanning the Text)	यह तेजी से पढ़ने और विशिष्ट जानकारी (Specific Information) ढूँढने के कौशल का अभ्यास है। एक लम्बा पाठ दिया जाता है, और अध्यापकों को कुछ विशेष तथ्य (जैसे, नाम, तारीख, संख्या) सबसे तेज़ी से ढूँढकर बताने होते हैं।	प्रश्न: "इस लेख में '1947' की तारीख कितनी बार आई है और किस संदर्भ में?"
44.	विभिन्न प्रकार की सामग्री पढ़ना (Reading Diverse Material)	यह गतिविधि अध्यापकों को विभिन्न लेखन शैलियों (Writing Styles) को समझने और पढ़ाने के लिए तैयार करती है। अलग-अलग तरह की पठन सामग्री दी जाती है, जैसे अख़बार की ख़बर, कहानी, निर्देश पत्र, और एक विज्ञापन।	कार्य: विज्ञापन की भाषा आकर्षक क्यों होती है? निर्देश पत्र की भाषा सीधी और स्पष्ट क्यों होती है?

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		अध्यापकों को उनकी भाषा और उद्देश्य पर चर्चा करनी होती है।	
45.	पठन कोने का निर्माण (Creating a Reading Corner)	यह गतिविधि दिखाती है कि कैसे आकर्षक सामग्री चुनकर छात्रों में पठन के प्रति रुचि पैदा की जाए। अध्यापकों के समूह दिए गए संसाधनों (जैसे पुराने कागज़, चित्र) का उपयोग करके एक रोचक 'पठन कोना' (Reading Corner) बनाने की योजना बनाते हैं।	योजना के बिंदु: कौन सी किताबें रखेंगे? पोस्टर पर क्या स्लोगन होगा? यह आकर्षक कैसे दिखेगा?
46.	'रीडिंग रेस' (Reading Race)	यह पठन की गति (Reading Speed) और समझ दोनों का अभ्यास करवाती है। अध्यापकों को एक छोटा पाठ दिया जाता है, और एक निश्चित समय (जैसे 3 मिनट) में उसे पढ़कर उसके नीचे	मूल्यांकन: 3 मिनट में कितनी पंक्तियाँ पढ़ीं और कितने प्रश्नों का सही उत्तर दिया।

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
		दिए गए प्रश्नों का उत्तर देना होता है।	
47.	अखबार की कतरन (Newspaper Clipping)	यह वास्तविक और सामयिक भाषा पढ़ने का अभ्यास है। एक छोटी अखबार की कतरन दी जाती है। अध्यापकों को उसे पढ़कर मुख्य समाचार, उसके संभावित प्रभाव और उस पर अपनी राय मौखिक रूप से देनी होती है।	चर्चा के बिंदु: इस खबर का आपके शहर पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? शीर्षक कितना उचित है?
48.	पठन की गति और समझ (Reading Speed and Comprehension)	यह एक औपचारिक मूल्यांकन है। एक पाठ दिया जाता है। एक मिनट में कितने शब्द पढ़े गए (गति), और उसके बाद पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर (समझ) के आधार पर प्रदर्शन का विश्लेषण करना।	उदाहरण: अध्यापक 1 ने 1 मिनट में 150 शब्द पढ़े और 5 में से 4 प्रश्नों के उत्तर दिए।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
49.	किताब समीक्षा (Book Review)	यह आलोचनात्मक पठन (Critical Reading) और सुसंगत लेखन का अभ्यास है। अध्यापक किसी कहानी या पाठ को पढ़कर उस पर एक छोटी मौखिक या लिखित समीक्षा देते हैं, जिसमें वे पात्र, कहानी की थीम और लेखक की शैली पर अपने विचार बताते हैं।	समीक्षा के बिंदु: कहानी का सबसे मज़ेदार हिस्सा क्या था? क्या लेखक का संदेश स्पष्ट था? क्या आप इसे छात्रों को पढ़ने की सलाह देंगे?
50.	पात्र विश्लेषण (Character Analysis)	इस गतिविधि में अध्यापक कहानी के पात्रों की विशेषताओं, प्रेरणाओं और भूमिका को गहराई से समझते हैं। एक कहानी पढ़ने के बाद, अध्यापकों को एक मुख्य पात्र चुनना होता है और उसके बारे में सभी जानकारी (जैसे उसकी	पात्र: 'पंच परमेश्वर' कहानी का जुम्मन शेख। प्रश्न: वह पहले कैसे था और फैसला सुनाने के बाद उसका व्यवहार क्यों बदला?

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		मानसिकता, उद्देश्य और कार्य) एक चार्ट पर लिखनी होती है।	

IV. लेखन (Writing) गतिविधियाँ

लेखन कौशल भाषा शिक्षण के चारों मूलभूत कौशलों में सबसे जटिल और चुनौतीपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यह न केवल व्याकरणिक सटीकता और वर्तनी की मांग करता है, बल्कि इसमें विचारों की स्पष्टता, तार्किक सुसंगतता और रचनात्मक अभिव्यक्ति का संश्लेषण भी आवश्यक होता है। लेखन, विचारों को स्थायी और संगठित रूप प्रदान करने का माध्यम है; यह उच्च-क्रम चिंतन (Higher-Order Thinking), आलोचनात्मक विश्लेषण और स्व-अभिव्यक्ति का अंतिम प्रमाण है। इन 100 गतिविधियों के संग्रह में लेखन कौशल के लिए समर्पित खंड का उद्देश्य छात्रों को केवल 'साफ़ लिखना' नहीं सिखाना है, बल्कि उन्हें प्रभावी रूप से संवाद करना, तर्क देना और विविध लेखन शैलियों (Genres) में निपुण होना सिखाना है। एक प्रभावी लेखन शिक्षण प्रक्रिया कक्षा को एक ऐसी जगह बनाती है जहाँ छात्र अपने विचारों को व्यवस्थित करने, उन्हें परिष्कृत करने और अंततः उन्हें एक प्रभावशाली लिखित रूप देने का आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं।

लेखन शिक्षण का प्रारंभिक लक्ष्य छात्रों में रचनात्मकता (Creativity) और सहज अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना है। 'कहानी लिखना' और 'कविता/हाइकू लेखन' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को अपनी कल्पना को मुक्त करने और भाषा का उपयोग व्यक्तिगत और भावनात्मक तरीके से करने का अवसर देती हैं। 'कहानी लेखन' के लिए एक प्रारंभिक वाक्य या कुछ थीम-शब्द देना, छात्रों की कल्पना को एक दिशा देता है, जिससे वे लेखन की शुरुआत करने में आने वाली बाधा (Writer's Block) को पार कर पाते हैं। वहीं, 'हाइकू लेखन' (5-7-5 शब्दांशों का नियम) छात्रों को सिखाता है कि कम शब्दों में गहन अर्थ और भावनाएँ कैसे व्यक्त की जा सकती हैं, जिससे वे शब्दों के चयन और उनके प्रभाव के प्रति अधिक जागरूक होते हैं। ये रचनात्मक अभ्यास छात्रों के विचारों के प्रवाह को बढ़ाते हैं, जो आगे चलकर औपचारिक लेखन में भी सहायक सिद्ध होता है।

लेखन कौशल के विकास में प्रारूपों (Formats) और लेखन शैलियों (Styles) की समझ आवश्यक है। 'पत्र/ईमेल लेखन' और 'रिपोर्ट लेखन' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को औपचारिक और अनौपचारिक लेखन के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से सिखाती हैं। 'पत्र लेखन' में, छात्रों को उद्देश्य (शिकायत, अनुरोध, बधाई) के आधार पर टोन, भाषा चयन और संरचना (शीर्षक, अभिवादन, समापन)

में बदलाव करना पड़ता है। 'रिपोर्ट लेखन' छात्रों को तथ्यों पर आधारित, निष्पक्ष और संक्षिप्त भाषा का उपयोग करना सिखाता है, जहाँ विचारों की व्यक्तिपरक अभिव्यक्ति के बजाय तथ्यों की सटीकता पर जोर होता है। ये अभ्यास छात्रों को अकादमिक और पेशेवर दुनिया की उन मांगों के लिए तैयार करते हैं जहाँ उन्हें विभिन्न दर्शकों और उद्देश्यों के लिए लेखन की शैलियाँ बदलनी पड़ती हैं।

लेखन की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए, व्यावहारिक लेखन (Functional Writing) का अभ्यास महत्वपूर्ण है। 'विज्ञापन लेखन' और 'निर्देश लिखना' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को सिखाती हैं कि भाषा का उपयोग प्रेरित करने (Persuade) और जानकारी देने (Inform) के लिए कैसे किया जाता है। विज्ञापन लेखन छात्रों को आकर्षक, संक्षिप्त और भावनात्मक भाषा का उपयोग करना सिखाता है, जो उपभोक्ता को तुरंत प्रभावित कर सके। 'निर्देश लिखना' (जैसे चाय बनाने की विधि या कोई शैक्षिक प्रक्रिया) छात्रों को स्पष्ट, क्रमबद्ध और सटीक भाषा का उपयोग करने के लिए मजबूर करता है, जहाँ एक भी शब्द का गलत चुनाव पूरे संदेश को अप्रभावी बना सकता है। यह अभ्यास उन्हें सिखाता है कि उद्देश्य की पूर्ति के लिए लेखन की संरचना कैसे की जाए।

लेखन कौशल में व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और चिंतन को बढ़ावा देने के लिए 'डायरी लेखन' और 'पोस्टकार्ड लेखन' जैसी गतिविधियाँ अमूल्य हैं। 'डायरी लेखन' छात्रों को बीते हुए कल (Past Tense) की क्रियाओं का अभ्यास करने, अपनी भावनाओं और विचारों को बिना किसी आलोचना के व्यक्त करने और आत्म-चिंतन करने का एक निजी मंच प्रदान करता है। यह लेखन उन्हें उनके भावनात्मक और मानसिक विकास को दस्तावेज़ित करने में मदद करता है। 'पोस्टकार्ड लेखन', जो कम शब्दों में अधिक जानकारी देने का अभ्यास है, छात्रों को सिखाता है कि वे अत्यधिक संक्षिप्तता बनाए रखते हुए भी अपनी यात्रा के अनुभव या भावना को कैसे संप्रेषित कर सकते हैं। यह लेखन के विभिन्न आयामों को छूने में सहायता करता है।

प्रभावी लेखन के लिए सटीकता (Accuracy) और स्व-जाँच (Self-Correction) आवश्यक हैं। 'त्रुटि सुधार' और 'स्व-सुधार' (Self-Correction Workshop) जैसी गतिविधियाँ छात्रों में व्याकरणिक और वर्तनी की जागरूकता विकसित करती हैं। 'त्रुटि सुधार' में, छात्र जानबूझकर की गई गलतियों को पहचान कर उन्हें सुधारते हैं, जिससे वे नियमों को रटने के बजाय व्याकरण को व्यावहारिक संदर्भ में लागू करना सीखते हैं। 'स्व-सुधार' कार्यशाला में, छात्रों को एक चेकलिस्ट (व्याकरण, विराम चिह्न, सुसंगतता) दी जाती है जिसका उपयोग वे अपने ही लिखे हुए पाठ की गुणवत्ता को जाँचने के लिए करते हैं। यह

गतिविधि छात्रों में आत्मानुशासन की भावना पैदा करती है और उन्हें एक चिंतनशील लेखक (Reflective Writer) बनने में मदद करती है, जो अपने काम की आलोचना स्वयं कर सके।

सारांश लेखन (Summary Writing) और प्रश्नावली बनाना (Creating a Questionnaire) जैसी गतिविधियाँ छात्रों में विश्लेषणात्मक लेखन कौशल को विकसित करती हैं। 'सारांश लेखन' छात्रों को एक लंबे पाठ के मुख्य विचारों को पहचानने, अनावश्यक विवरणों को हटाने और उन्हें अत्यधिक संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने का कौशल सिखाता है। यह छात्रों को जानकारी को प्रभावी ढंग से संश्लेषित करने में मदद करता है। 'प्रश्नावली बनाना' छात्रों को किसी विषय (Theme) पर उद्देश्य-केंद्रित प्रश्न बनाने के लिए प्रेरित करता है, जो उन्हें दिखाता है कि कैसे प्रश्नों की संरचना, भाषा और क्रम जानकारी जुटाने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। यह अभ्यास छात्रों के शोध कौशल और उनके विचारों को व्यवस्थित करने की क्षमता को बढ़ाता है।

लेखन की गतिविधियों को मौखिक और पठन कौशल के साथ जोड़ना महत्वपूर्ण है। 'संवाद लेखन' (Dialogue Writing) एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ छात्र सुनते हैं कि पात्र वास्तविक जीवन में कैसे बात करेंगे और फिर उसे लिखित रूप में प्रस्तुत करते हैं। इससे छात्रों को प्रासंगिक और स्वाभाविक बातचीत लिखने का अभ्यास मिलता है, जिससे उनका लेखन कृत्रिम नहीं लगता। इसी प्रकार, 'रिपोर्ट लेखन' अक्सर पठन सामग्री (स्रोत) पर आधारित होता है। लेखन कौशल के माध्यम से, छात्र अपने विचारों को ठोस रूप देते हैं, जो उनकी मौखिक अभिव्यक्ति को भी अधिक सुसंगत और संगठित बनाता है।

इस खंड की गतिविधियाँ शिक्षकों को लेखन के शिक्षण में विविधता लाने के लिए प्रेरित करती हैं। केवल लंबे निबंध लिखने पर जोर देने के बजाय, 'छह शब्द की कहानी' जैसी गतिविधि संक्षिप्त अभिव्यक्ति और भावनात्मक प्रभाव पैदा करने की कला पर जोर देती है। यह छात्रों को सिखाता है कि भाषा की शक्ति केवल उसकी लंबाई में नहीं, बल्कि उसके प्रभाव और सटीकता में निहित है। लेखन शिक्षण में इस तरह की नवीनता छात्रों की रुचि बनाए रखती है और उन्हें विभिन्न लेखन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है।

निष्कर्ष रूप में, लेखन कौशल की ये गतिविधियाँ छात्रों के भाषाई विकास के शिखर का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे छात्रों को केवल लिपिक (Scribes) नहीं, बल्कि प्रभावी संचारक बनने के लिए

तैयार करती हैं। 'रचनात्मक कहानी लेखन' से लेकर 'औपचारिक रिपोर्ट लेखन' तक, यह संग्रह छात्रों को सटीक, सुसंगत और प्रभावशाली तरीके से अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए आवश्यक सभी उपकरण प्रदान करता है। इन लेखन अभ्यासों के माध्यम से, छात्र न केवल भाषा पर अपनी पकड़ मजबूत करते हैं, बल्कि आलोचनात्मक चिंतन, तार्किक संगठन और विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति जैसे अमूल्य कौशल भी विकसित करते हैं, जो उन्हें शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन दोनों में सफलता की ओर ले जाते हैं।

लेखन (Writing) गतिविधियाँ

51. कहानी लिखना (Story Writing): दिए गए शब्दों या चित्र के आधार पर कहानी लिखना।
52. पत्र/ईमेल लेखन (Letter/Email Writing): औपचारिक या अनौपचारिक पत्र/ईमेल लिखना।
53. डायरी लेखन (Diary Entry): किसी काल्पनिक दिन की डायरी प्रविष्टि लिखना।
54. कविता/हाइकू लेखन (Poem/Haiku Writing): किसी विषय पर छोटी कविता या हाइकू लिखना।
55. विज्ञापन लेखन (Advertisement Writing): किसी उत्पाद के लिए आकर्षक विज्ञापन लिखना।
56. संवाद लेखन (Dialogue Writing): किन्हीं दो पात्रों के बीच संवाद लिखना।
57. अक्षर या शब्द कला (Letter/Word Art): अक्षरों या शब्दों को रचनात्मक रूप से सजाकर लिखना।
58. निर्देश लिखना (Writing Instructions): कोई व्यंजन बनाने या कोई काम करने के निर्देश लिखना।
59. 'छह शब्द की कहानी' (Six-Word Story): केवल छह शब्दों में एक पूरी कहानी लिखना।
60. पोस्टकार्ड लेखन (Postcard Writing): किसी यात्रा या घटना के बारे में एक पोस्टकार्ड लिखना।
61. सारांश लेखन (Summary Writing): किसी बड़े पाठ का संक्षिप्त सारांश लिखना।
62. प्रश्नावली बनाना (Creating a Questionnaire): किसी विषय पर सर्वे के लिए प्रश्न तैयार करना।

63.त्रुटि सुधार (Error Correction): व्याकरण या वर्तनी की गलतियों वाले वाक्यों को सुधारना।

64.स्व-सुधार (Self-Correction Workshop): अपने लिखे हुए पाठ को स्वयं जाँचना और सुधारना।

65.रिपोर्ट लेखन (Report Writing): किसी कार्यशाला या घटना पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट लिखना।

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
51.	कहानी लिखना (Story Writing)	यह रचनात्मकता और कल्पनाशील भाषा का उपयोग करने का अवसर देती है। अध्यापकों को कुछ प्रारंभिक शब्द (जैसे 'एक रहस्यमय दरवाज़ा', 'पीले जूते') या प्रारंभिक वाक्य दिए जाते हैं, जिन पर उन्हें एक कहानी लिखनी होती है।	प्रारंभिक वाक्य: "सुबह जब मेरी नींद खुली, तो मेरे बिस्तर पर एक छोटा-सा चमकीला पंख पड़ा था।" (इस वाक्य से कहानी शुरू करें।)
52.	पत्र/ईमेल लेखन (Letter/Email Writing)	यह औपचारिक और अनौपचारिक लेखन शैलियों (Writing Styles) और पत्र के प्रारूप (Format) का अभ्यास करवाती है। स्थिति दी जाती है: जैसे किसी अख़बार के संपादक	स्थिति: प्रिंसिपल को अपने विभाग में नई शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) मंगाने के लिए एक औपचारिक पत्र लिखें।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		को पत्र लिखना या किसी मित्र को अपनी नई नौकरी के बारे में ईमेल लिखना।	
53.	डायरी लेखन (Diary Entry)	यह व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, भावनाओं को व्यक्त करने और बीते हुए कल (Past Tense) का अभ्यास करने पर केंद्रित है। अध्यापकों को अपने कल के अनुभव (या किसी काल्पनिक छात्र के दिन) के बारे में डायरी में लिखना होता है।	कार्य: सोमवार को भाषा शिक्षण की कार्यशाला में भाग लेने के अपने अनुभव को डायरी में लिखें, जिसमें आप अपनी भावनाएँ भी व्यक्त करें।
54.	कविता/हाइकू लेखन (Poem/Haiku Writing)	यह भाषा में लय, तुक (Rhyme) और संक्षिप्त अभिव्यक्ति का अभ्यास है। एक विषय दिया जाता है (जैसे 'बारिश', 'बचपन', 'स्कूल') और अध्यापकों को उस पर एक छोटी कविता या 5-7-5	विषय: बारिश। उदाहरण हाइकू: बूंदें गिरीं (5) / मिट्टी की सौंधी खुशबू (7) / मन हो गया शांत (5)

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		शब्दांशों वाला एक हाइकू लिखना होता है।	
55.	विज्ञापन लेखन (Advertisement Writing)	यह प्रभावशाली, आकर्षक और प्रेरक भाषा (Persuasive Language) का अभ्यास करवाती है। अध्यापकों को किसी उत्पाद (जैसे एक नया भाषा सीखने वाला ऐप) या किसी स्कूल प्रवेश के लिए एक संक्षिप्त और आकर्षक विज्ञापन तैयार करना होता है।	उत्पाद: "सरल हिंदी व्याकरण पुस्तक"। विज्ञापन के मुख्य शब्द: 'केवल 10 दिनों में', 'गारंटीड परिणाम', 'अभी खरीदें'।
56.	संवाद लेखन (Dialogue Writing)	यह प्रासंगिक और स्वाभाविक बातचीत लिखने का कौशल विकसित करता है। दो पात्रों (जैसे एक शिक्षक और एक छात्र के अभिभावक) के बीच एक विषय-केंद्रित बातचीत लिखनी होती है।	स्थिति: एक छात्र के अभिभावक छात्र की कमज़ोर लिखावट के बारे में शिक्षक से बात कर रहे हैं। संवाद में समाधान और सलाह शामिल होनी चाहिए।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
57.	अक्षर या शब्द कला (Letter/Word Art)	यह गतिविधि दृश्य और रचनात्मक लेखन को जोड़ती है। अध्यापकों को एक शब्द या अक्षर (जैसे 'माँ' या 'ज्ञान') चुनना होता है और उसे इस तरह से सजाकर लिखना होता है कि वह उस शब्द के अर्थ को भी दर्शाए।	उदाहरण: 'पेड़' शब्द को इस तरह लिखें कि अक्षरों से एक पेड़ का आकार बने।
58.	निर्देश लिखना (Writing Instructions)	यह स्पष्ट, क्रमबद्ध और सटीक भाषा के उपयोग का अभ्यास है। अध्यापकों को कोई काम करने के चरणबद्ध निर्देश (Step-by-step instructions) लिखने होते हैं।	कार्य: 'छात्रों को कहानी कैसे पढ़ाएँ' या 'चाय बनाने की विधि' पर निर्देश लिखें।
59.	'छह शब्द की कहानी' (Six-Word Story)	यह संक्षिप्त अभिव्यक्ति और भावनात्मक प्रभाव पैदा करने के कौशल का अभ्यास है। अध्यापकों को केवल छह शब्दों में एक पूरी कहानी लिखनी होती है।	उदाहरण: "बिना पढ़े पास। अब नौकरी नहीं है।" या "छोटा बच्चा, गिरा, उठा, दौड़ा फिर।"

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
60.	पोस्टकार्ड लेखन (Postcard Writing)	यह संक्षिप्त, अनौपचारिक और भावनात्मक लेखन का अभ्यास है। अध्यापकों को किसी यात्रा या कार्यशाला के अनुभव के बारे में अपने एक दोस्त को एक पोस्टकार्ड लिखना होता है। (पोस्टकार्ड में स्थान कम होता है, इसलिए कम शब्दों में ज़्यादा बात कहनी होती है)।	स्थिति: शिमला में बिताए गए अपने एक दिन के बारे में दोस्त को पोस्टकार्ड लिखें।
61.	सारांश लेखन (Summary Writing)	यह मुख्य विचारों को पहचानने और निष्पक्ष रूप से उन्हें संक्षेप में प्रस्तुत करने का कौशल है। एक लंबा लेख दिया जाता है। अध्यापकों को उस लेख को पढ़कर उसकी लंबाई के एक-चौथाई में उसका सारांश लिखना होता है।	कार्य: 'भाषा के चार कौशल' पर 400 शब्दों का लेख दिया गया है। उसका 100 शब्दों में सारांश लिखें।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
62.	प्रश्नावली बनाना (Creating a Questionnaire)	यह उद्देश्य-केंद्रित प्रश्न बनाने और सूचना जुटाने की क्षमता का अभ्यास है। अध्यापकों को किसी विषय (जैसे 'बच्चों की पढ़ने की आदतें') पर एक सर्वे करने के लिए 5-7 प्रभावी प्रश्न बनाने होते हैं।	प्रश्न: "आप रोज़ाना औसतन कितने मिनट पढ़ते हैं?" या "आपको किस तरह की किताबें पसंद हैं (कहानी, कविता, विज्ञान)?"
63.	त्रुटि सुधार (Error Correction)	यह व्याकरणिक और वर्तनी की सटीकता पर ध्यान केंद्रित करता है। एक छोटे पाठ में जानबूझकर 5-7 व्याकरण/वर्तनी की गलतियाँ डाली जाती हैं। अध्यापकों को वे गलतियाँ पहचान कर उन्हें सुधारना होता है।	ग़लत वाक्य: "बच्चा खाना खाती है।" सुधार: "बच्चा खाना खाता है।"
64.	स्व-सुधार (Self-Correction Workshop)	यह अध्यापकों में अपने लेखन की गुणवत्ता को स्वयं जाँचने और सुधारने की आदत विकसित करने के लिए है। अध्यापकों द्वारा लिखे	चेकलिस्ट बिंदु: क्या सभी विराम चिह्नों का सही प्रयोग हुआ है?

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		गए किसी भी पाठ (जैसे कहानी या पत्र) को वापस दिया जाता है, और उन्हें एक चेकलिस्ट (जैसे व्याकरण, विराम चिह्न, वर्तनी) का उपयोग करके उसे स्वयं सुधारना होता है।	क्या क्रिया का काल सही है?
65.	रिपोर्ट लेखन (Report Writing)	यह तथ्यों पर आधारित, निष्पक्ष और औपचारिक लेखन का अभ्यास है। अध्यापकों को किसी स्कूल इवेंट (जैसे 'वार्षिक उत्सव' या 'विज्ञान प्रदर्शनी') पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट लिखनी होती है, जिसमें 'क्या, कब, कहाँ, क्यों और कैसे' का जवाब हो।	कार्य: "भाषा कार्यशाला का एक दिवसीय रिपोर्ट" लिखें।

V. व्याकरण और शब्दावली (Grammar and Vocabulary) गतिविधियाँ

व्याकरण और शब्दावली किसी भी भाषा की आधारशिला हैं। जहाँ शब्दावली (Vocabulary) भाषा को पदार्थ (Substance) प्रदान करती है—वे ईंटें जिनसे वाक्य बनते हैं—वहीं व्याकरण (Grammar) उन ईंटों को एक सुसंगत, अर्थपूर्ण और संप्रेषणीय संरचना में व्यवस्थित करने वाला राजगीर (Structure) है। व्याकरण और शब्दावली के बिना, भाषा या तो अर्थहीन शब्दों का ढेर बन जाती है या अस्पष्ट वाक्यों का समूह। इन 100 गतिविधियों के संग्रह में व्याकरण और शब्दावली खंड का मुख्य लक्ष्य इन दोनों तत्वों को पारंपरिक रटने और पृथक अभ्यास से मुक्त करके प्रासंगिक (Contextual), इंटरैक्टिव और कार्यात्मक शिक्षण का हिस्सा बनाना है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि छात्र नियमों को केवल याद न करें, बल्कि उन्हें भाषा के उपयोग के दौरान स्वाभाविक रूप से और प्रभावी ढंग से लागू करना सीखें, जिससे उनकी भाषा दक्षता और अभिव्यक्ति की सटीकता (Accuracy) दोनों में वृद्धि हो।

पारंपरिक शिक्षण में व्याकरण को अक्सर अमूर्त नियमों के एक समूह के रूप में पढ़ाया जाता है, जिससे यह छात्रों के लिए बोझिल और नीरस बन जाता है। इन गतिविधियों का दार्शनिक आधार आगमनात्मक शिक्षण (Inductive Teaching) पर केंद्रित है। इसका अर्थ है कि छात्रों को पहले भाषा के उदाहरणों और प्रयोगों से परिचित कराया जाता है, और फिर उन्हें स्वयं नियमों की पहचान करने के लिए प्रेरित किया जाता है। 'कारक/विभक्ति कार्ड खेल' और 'क्रिया का सही रूप' जैसी गतिविधियाँ व्याकरणिक तत्वों को खेल-आधारित संदर्भों में प्रस्तुत करती हैं। 'कारक कार्ड खेल' छात्रों को यह सिखाता है कि 'ने', 'को', 'से' जैसे कारक चिह्न वाक्यों में संबंधों और भूमिकाओं को कैसे निर्धारित करते हैं। 'क्रिया का सही रूप' छात्रों को लिंग, वचन और काल के अनुसार क्रिया को समायोजित करने का व्यावहारिक अभ्यास देता है, जिससे वे व्याकरण को उपयोग के माध्यम से समझते हैं, न कि केवल सूत्रों के माध्यम से।

शब्दावली का अधिग्रहण (Acquisition) भाषा में प्रवाह (Fluency) और सटीकता दोनों के लिए आवश्यक है। एक सीमित शब्दावली छात्र की अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित करती है। इन गतिविधियों का लक्ष्य शब्दावली को केवल सूची के रूप में नहीं, बल्कि संबंधों के नेटवर्क के रूप में सिखाना है। 'विपरीतार्थक शब्द/पर्यायवाची शब्द' और 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को

सिखाती हैं कि शब्दों के बीच अर्थगत संबंध कैसे होते हैं। यह छात्रों की शब्द-संपत्ति को न केवल मात्रात्मक बल्कि गुणात्मक रूप से भी बढ़ाता है, जिससे वे अपनी अभिव्यक्ति में सूक्ष्म अंतर (Nuances) ला पाते हैं। 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' अभ्यास भाषा में संक्षिप्तता (Conciseness) और सटीकता लाता है, जो उन्नत लेखन और मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है।

व्याकरण और शब्दावली शिक्षण में पुनरावृत्ति और सक्रिय स्मरण (Active Recall) को इंटरैक्टिव गेम्स के माध्यम से सुविधाजनक बनाया गया है। 'शब्द जाल/वर्ड सर्च' और 'शब्दों की माला' जैसी गतिविधियाँ शब्दावली और वर्तनी (Spelling) को मजेदार और सामूहिक रूप से दोहराने का अवसर देती हैं। 'शब्दों की माला' न केवल नए शब्दों को याद करने में मदद करती है, बल्कि यह मौखिक प्रवाह को भी बढ़ाती है, क्योंकि छात्रों को तुरंत सोचना और अगले अक्षर से शुरू होने वाला सही शब्द बोलना होता है। ये खेल कक्षा के वातावरण को तनावमुक्त बनाते हैं और छात्रों की भागीदारी को बढ़ाते हैं, जिससे उन्हें अनजाने में ही व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दावली को दोहराने का मौका मिलता है।

वाक्य संरचना और अर्थ की स्पष्टता को समझना व्याकरण शिक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। 'युग्म शब्द/श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' और 'वाक्य रूपांतरण' जैसी गतिविधियाँ इस पर ध्यान केंद्रित करती हैं। 'युग्म शब्द' उन शब्दों के जोड़े के बीच अंतर को स्पष्ट करता है जो सुनने में समान होते हैं (जैसे 'अन्न' और 'अन्य'), लेकिन अर्थ में पूरी तरह से भिन्न होते हैं। यह अभ्यास छात्रों को उच्चारण की सटीकता और संदर्भ के महत्व को समझने में मदद करता है। 'वाक्य रूपांतरण' छात्रों को सिखाता है कि कैसे एक साधारण वाक्य को निषेधात्मक, प्रश्नवाचक या संयुक्त/मिश्रित वाक्यों में बदला जाता है, जिससे वे अपनी लेखन शैली में विविधता और परिष्कार ला पाते हैं। यह अभ्यास छात्रों को व्याकरण को रचनात्मक अभिव्यक्ति के उपकरण के रूप में उपयोग करने की क्षमता देता है।

शब्दावली और व्याकरण का गहरा संबंध शब्द निर्माण से है। 'उपसर्ग और प्रत्यय का मिलान' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को सिखाती हैं कि कैसे मूल शब्द (Root Word) में उपसर्ग (Prefixes) और प्रत्यय (Suffixes) जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं। इस ज्ञान से छात्र न केवल अपनी शब्दावली को तेजी से बढ़ाते हैं, बल्कि अपरिचित शब्दों के अर्थ का तार्किक अनुमान लगाने में भी सक्षम होते हैं। यह कौशल छात्रों को स्वतंत्र शब्दावली अधिग्रहणकर्ता (Independent Vocabulary Acquirers) बनाता है, जो किसी भी पाठ को पढ़ते समय संदर्भ के आधार पर नए शब्दों को समझ सकते हैं।

भाषा की अभिव्यंजक शक्ति (Expressive Power) को मुहावरे और लोकोक्तियाँ बढ़ाते हैं। 'मुहावरे और लोकोक्तियाँ' गतिविधि छात्रों को भाषा की सांस्कृतिक गहराई और अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति से परिचित कराती है। मुहावरे सीखने से छात्रों की अभिव्यक्ति अधिक स्वाभाविक, रंगीन और प्रभावशाली बनती है। छात्र समझते हैं कि कैसे शाब्दिक अर्थ (Literal Meaning) से परे जाकर भाषा का उपयोग किया जाता है। यह अभ्यास उनकी सांस्कृतिक समझ को भी बढ़ाता है, क्योंकि मुहावरे अक्सर किसी संस्कृति के अनुभवों और इतिहास पर आधारित होते हैं।

व्याकरण शिक्षण में वर्तनी (Orthography) और वाक्य के घटकों को पहचानना भी आवश्यक है। 'शब्दकोश का उपयोग' गतिविधि छात्रों को केवल शब्दों का अर्थ ही नहीं बताती, बल्कि शब्दों के सही क्रम (Alphabetic Order) और सटीक वर्तनी की जाँच करने का कौशल भी सिखाती है। 'वाक्य में क्रियापद ढूँढना' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को वाक्य को कर्ता (Subject), क्रिया (Verb) और कर्म (Object) जैसे उसके मूलभूत घटकों में विभाजित करना सिखाती हैं। यह विश्लेषणात्मक क्षमता उन्हें अपने स्वयं के वाक्यों की संरचना को समझने और उन्हें व्याकरणिक रूप से सही बनाने में मदद करती है।

इन गतिविधियों का अंतिम लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि व्याकरण और शब्दावली को लेखन और मौखिक अभिव्यक्ति के कौशलों से अलग न किया जाए। 'विशेषण-विशेष्य मिलान' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को सिखाती हैं कि कैसे विशेषण (Adjective) का उपयोग संज्ञा (Noun) के साथ करके विवरणात्मक और समृद्ध वाक्य बनाए जाते हैं, जो उनके लेखन की गुणवत्ता को तुरंत बढ़ा देता है। शब्दावली के खेल और व्याकरण के अभ्यास छात्रों को वे उपकरण प्रदान करते हैं जिनका उपयोग वे अपनी कहानियों, रिपोर्टों और संवादों में सटीकता और प्रवाह के साथ करते हैं।

निष्कर्ष रूप में, व्याकरण और शब्दावली की ये गतिविधियाँ भाषा शिक्षण के लिए एक ठोस, इंटरैक्टिव और कार्यात्मक ढाँचा प्रदान करती हैं। वे व्याकरण को खेल, पहेली और तार्किक समस्या के रूप में प्रस्तुत करके सीखने की प्रक्रिया को मनोरंजक बनाती हैं। यह दृष्टिकोण छात्रों को न केवल नियमों का ज्ञान देता है, बल्कि उन्हें उन नियमों का विविध संदर्भों में प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता भी देता है। ये गतिविधियाँ छात्रों की भाषा को सटीक, समृद्ध और अभिव्यंजक बनाती हैं, जिससे वे शैक्षणिक और व्यावसायिक दोनों स्तरों पर आत्मविश्वास और निपुणता के साथ संवाद करने में सक्षम होते हैं। यह खंड भाषा दक्षता के लिए व्याकरणिक शुद्धता और शाब्दिक समृद्धि के अपरिहार्य मूल्य को स्थापित करता है।

व्याकरण और शब्दावली (Grammar and Vocabulary) गतिविधियाँ

66.शब्द जाल/वर्ड सर्च (Word Search/Crossword): शब्दावली को ढूँढना या हल करना।

67.विपरीतार्थक शब्द/पर्यायवाची शब्द (Antonyms/Synonyms): शब्दों के विलोम या समानार्थक शब्द ढूँढना।

68.कारक/विभक्ति कार्ड खेल (Case Marker Card Game): वाक्यों में सही कारक का उपयोग करना।

69.'क्रिया का सही रूप' (Correct Form of Verb): वाक्यों में क्रिया के सही काल और रूप का उपयोग करना।

70.शब्दों की माला (Word Chain): अंतिम अक्षर से शुरू होने वाला नया शब्द बोलना।

71.वाक्य बनाना (Sentence Construction): दिए गए शब्दों का प्रयोग करके अर्थपूर्ण वाक्य बनाना।

72.बहुवचन/लिंग बदलना (Plural/Gender Change): शब्दों के बहुवचन या लिंग को बदलकर वाक्य में उपयोग करना।

73.मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs): मुहावरों के अर्थ समझना और वाक्यों में प्रयोग करना।

74.संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण पहचानना (Identify Noun/Pronoun/Adjective): पाठ में विभिन्न प्रकार के शब्दों को पहचानना।

75.'शब्दावली बिंगो' (Vocabulary Bingo): शब्दावली के साथ बिंगो खेलना।

76.शब्द-युग्म (Word Pairs): मिलते-जुलते लेकिन भिन्न अर्थ वाले शब्द-युग्मों का अभ्यास।

77.वाक्य रूपांतरण (Sentence Transformation): वाक्यों को एक काल से दूसरे काल में बदलना या प्रश्नवाचक बनाना।

78.संबंधबोधक शब्दों का खेल (Conjunction Game): वाक्यों को उचित संबंधबोधक शब्दों से जोड़ना।

79.नए शब्दों की उत्पत्ति (Word Origin): एक मूल शब्द से विभिन्न शब्द बनाना (जैसे: 'पढ़ना' से 'पढ़ाई', 'पढ़ने वाला')।

80.वाक्यों को रंगना (Color the Sentence): व्याकरण की संरचना के आधार पर वाक्यों के हिस्सों को अलग-अलग रंगों से चिह्नित करना।

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
66.	शब्द जाल/वर्ड सर्च (Word Search/Crossword)	यह गतिविधि शब्दावली को याद करने और वर्तनी (Spelling) का अभ्यास करने का एक मजेदार तरीका है। शिक्षकों द्वारा बनाए गए शब्द जाल में अध्यापकों को शिक्षण से संबंधित 10-15 शब्द ढूँढने होते हैं।	कार्य: बोर्ड पर एक वर्ग में अक्षरों का जाल बनाकर उनमें से क्रियाओं (Verbs) को ढूँढना। जैसे: लिखना, सोना, पढ़ना, जाना।
67.	विपरीतार्थक शब्द/पर्यायवाची शब्द (Antonyms/Synonyms)	यह शब्दावली को समृद्ध करने और शब्दों के बारीक अर्थों को समझने का अभ्यास है। एक शब्द सूची दी जाती है, और	विलोम शब्द का अभ्यास: 'सुंदर' (बदसूरत), 'सफ़ल' (असफल)। पर्यायवाची शब्द का

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		अध्यापकों को उनके विलोम (Antonyms) या पर्यायवाची (Synonyms) शब्दों को लिखना होता है।	अभ्यास: 'आकाश' (गगन, नभ)।
68.	कारक/विभक्ति कार्ड खेल (Case Marker Card Game)	यह वाक्यों में सही संबंध स्थापित करने वाले व्याकरणिक तत्वों (कारक चिह्नों) का अभ्यास करवाती है। कार्ड पर 'ने', 'को', 'से', 'में', 'पर' आदि कारक चिह्न लिखे होते हैं। अध्यापकों को अपूर्ण वाक्यों को पूरा करने के लिए सही कार्ड का चुनाव करना होता है।	अपूर्ण वाक्य: "कमल ( ) खाना खाया।" सही कार्ड: ने। वाक्य: "कमल ने खाना खाया।"
69.	'क्रिया का सही रूप' (Correct Form of Verb)	यह काल (Tense) और लिंग-वचन (Gender-	क्रिया: 'जाना'। वाक्य: 1. वह कल बाज़ार

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
		Number) के अनुसार क्रिया के रूप को बदलने का अभ्यास है। एक क्रिया दी जाती है, और अध्यापकों को दिए गए कर्ता के साथ उसका सही रूप लिखना होता है।	(भूतकाल में) गया/गई। 2. हम अभी स्कूल (वर्तमान काल में) जा रहे हैं।
70.	शब्दों की माला (Word Chain)	यह शब्दावली और मौखिक प्रवाह को बढ़ाने का एक मनोरंजक खेल है। एक अध्यापक एक शब्द बोलता है, और अगले अध्यापक को उस शब्द के अंतिम अक्षर से शुरू होने वाला नया शब्द बोलना होता है।	अध्यापक 1: कमल। अध्यापक 2: लड़की। अध्यापक 3: कीमत। अध्यापक 4: तकलीफ।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
71.	लिंग-वचन का 'सही-गलत' (Gender-Number Agreement)	यह संज्ञा (Noun) के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया और विशेषणों को सही करने का अभ्यास है। शिक्षक जानबूझकर लिंग या वचन की गलती वाले वाक्य लिखते हैं, और अध्यापकों को उन्हें पहचानकर सुधारना होता है।	ग़लत वाक्य: "मेरा किताब टेबल पर रखा है।" सुधार: "मेरी किताब टेबल पर रखी है।"
72.	उपसर्ग और प्रत्यय का मिलान (Prefix and Suffix Matching)	यह नए शब्दों के निर्माण और शब्दावली विस्तार को समझने के लिए है। दो कॉलम दिए जाते हैं: एक में मूल शब्द (जैसे सफल, देश) और दूसरे में उपसर्ग/प्रत्यय (जैसे वि-, -ता, -ई)। अध्यापकों को	मिलान: 'सफल' + '-ता' = सफलता। 'वि-' + 'ज्ञान' = विज्ञान।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		सही संयोजन बनाना होता है।	
73.	मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs)	यह अप्रचलित भाषा और भावनात्मक अभिव्यक्ति को समझने का अभ्यास है। अध्यापकों को मुहावरों का अर्थ बताने और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करने को कहा जाता है।	मुहावरा: "अँगूठा दिखाना"। अर्थ: साफ़ मना कर देना। वाक्य प्रयोग: "जब मैंने उससे मदद माँगी, तो उसने अँगूठा दिखा दिया।"
74.	वाक्य रूपांतरण (Sentence Transformation)	यह वाक्य संरचना के प्रकारों को समझने का अभ्यास है। एक प्रकार का वाक्य दिया जाता है (जैसे साधारण), और अध्यापकों को उसे दूसरे प्रकार (जैसे निषेधात्मक	वाक्य: "वह रोज़ स्कूल जाता है।" निषेधात्मक में बदलो: "वह रोज़ स्कूल नहीं जाता है।"

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		या प्रश्नवाचक) में बदलना होता है।	
75.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word for Many)	यह भाषा में संक्षिप्तता और अभिव्यक्ति की शक्ति लाने का अभ्यास है। एक वाक्यांश दिया जाता है, जिसके लिए अध्यापकों को एक ही शब्द चुनना होता है।	वाक्यांश: "जिसके मन में दया हो।" उत्तर: दयालु। वाक्यांश: "जो कभी न मरे।" उत्तर: अमर।
76.	शब्दकोश का उपयोग (Dictionary Usage Practice)	यह सही वर्तनी जानने, शब्दों के क्रम को समझने और अनेक अर्थ जानने का कौशल है। अध्यापकों को 5 शब्द दिए जाते हैं, और उन्हें उन शब्दों को शब्दकोश के क्रम में व्यवस्थित करना होता है।	शब्द: पेड़, पानी, पर्वत, पवन, पक्षी। सही क्रम: पक्षी, पानी, पर्वत, पवन, पेड़।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
77.	वाक्य में क्रियापद ढूँढना (Identifying the Verb Phrase)	यह वाक्य के मुख्य घटकों (Parts of Speech) को समझने का अभ्यास है। अध्यापकों को एक वाक्य दिया जाता है और उन्हें उस वाक्य के क्रियापद (Verb) और कर्ता (Subject) को पहचान कर अलग करना होता है।	वाक्य: "बच्चे मैदान में तेज़ी से दौड़ रहे थे।" क्रियापद: दौड़ रहे थे। कर्ता: बच्चे।
78.	विशेषण-विशेष्य मिलान (Adjective-Noun Matching)	यह विवरणात्मक शब्दावली और विशेषणों के सही प्रयोग का अभ्यास है। दो कॉलम दिए जाते हैं: एक में विशेषण (जैसे ठंडा, गहरा) और दूसरे में संज्ञा (जैसे समुद्र, पानी, चाय)।	मिलान: ठंडा $\rightarrow$ पानी/चाय। गहरा $\rightarrow$ समुद्र/जंगल।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		अध्यापकों को उचित मिलान करना होता है।	
79.	युग्म शब्द/श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (Homophones/Pair Words)	यह उन शब्दों को समझने का अभ्यास है जो सुनने में एक जैसे लगते हैं, लेकिन उनके अर्थ अलग होते हैं। अध्यापकों को ऐसे शब्दों के जोड़े का अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्हें वाक्यों में प्रयोग करना होता है।	युग्म शब्द: 'अन्न' (अनाज) और 'अन्य' (दूसरा)। वाक्य: 'अन्न' के बिना जीवन संभव नहीं। क्या आपके पास कोई 'अन्य' विकल्प है?
80.	विलोम शब्द की प्रतियोगिता (Antonym Race)	यह तेज़ी से सोचने और शब्दावली की याददाश्त का खेल है। शिक्षक एक-एक करके 20 शब्द बोलते हैं, और अध्यापकों के समूह को सबसे तेज़ी से उसका	शब्द: 'अंधेरा'। (उत्तर: उजाला)। शब्द: 'आज़ादी'। (उत्तर: ग़ुलामी)।

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
		विलोम शब्द लिखकर दिखाना होता है।	

VI. रचनात्मक और सांस्कृतिक (Creative and Cultural) गतिविधियाँ

रचनात्मक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ भाषा शिक्षण के सबसे उन्नत और परिष्कृत आयाम का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये गतिविधियाँ भाषा को मात्र एक संचार प्रणाली के रूप में देखने के बजाय, चिंतन, सौंदर्यशास्त्र, इतिहास और सामाजिक पहचान के एक शक्तिशाली वाहक के रूप में स्थापित करती हैं। जहाँ श्रवण, मौखिक अभिव्यक्ति, पठन और लेखन भाषा के यांत्रिक कौशल हैं, वहीं रचनात्मक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ इन कौशलों के उच्चतम, कलात्मक और व्यावहारिक अनुप्रयोग को दर्शाती हैं। इन 100 गतिविधियों के संग्रह में अंतिम खंड का उद्देश्य छात्रों को आलोचनात्मक और सृजनात्मक विचारक बनाना, उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना और उन्हें यह सिखाना है कि भाषा का उपयोग अर्थपूर्ण सामाजिक परिवर्तन और कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए कैसे किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि भाषा सीखना एक अकादमिक अभ्यास न रहकर जीवन का एक समृद्ध, बहुआयामी अनुभव बन जाए।

रचनात्मकता का विकास छात्रों की भाषाई क्षमताओं को एकीकृत करने का अंतिम लक्ष्य है। 'बाल साहित्य बनाना' और 'शिक्षण उपकरण बनाना' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को सृजनकर्ता (Creators) की भूमिका में लाती हैं। बाल साहित्य का निर्माण छात्रों को सिखाता है कि सरल शब्दावली का उपयोग करके भी कैसे गहन नैतिक संदेश और आकर्षक कथाएँ बनाई जा सकती हैं। इसके लिए उन्हें अपने लक्षित दर्शकों (छोटे बच्चों) की समझ और शब्दावली के स्तर को ध्यान में रखना होता है। वहीं, 'शिक्षण उपकरण' (जैसे पपेट या चार्ट) का निर्माण छात्रों को यह सिखाता है कि कैसे दृश्य, स्पर्श और श्रवण सामग्री का उपयोग करके अमूर्त भाषाई अवधारणाओं (जैसे व्याकरण के नियम) को मूर्त और समझने में आसान बनाया जा सकता है। यह अभ्यास उनकी अभिनव समस्या-समाधान (Innovative Problem-Solving) क्षमताओं को विकसित करता है।

भाषा और संस्कृति का संबंध अटूट है; एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अधूरा है। भाषा संस्कृति को संरक्षित करती है, और संस्कृति भाषा को अर्थ प्रदान करती है। 'स्थानीय भाषा और मानक भाषा पर चर्चा' और 'लोक कथाओं का अनुवाद' जैसी गतिविधियाँ इस सांस्कृतिक चेतना को केंद्र में लाती हैं। 'स्थानीय भाषा पर चर्चा' छात्रों को उनकी मातृभाषा/स्थानीय बोली और मानक भाषा के बीच के अंतरों

और समानताओं को समझने के लिए प्रेरित करती है। यह उन्हें सिखाती है कि भाषाई विविधता का सम्मान कैसे किया जाए और कैसे स्थानीय भाषा को कक्षा में एक संसाधन के रूप में उपयोग किया जाए। 'लोक कथाओं का अनुवाद' छात्रों को अपनी सांस्कृतिक विरासत के मूल्यों और कहानियों को लक्षित भाषा (हिंदी) में लाने का मौका देता है, जिससे भाषा शिक्षण में सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है।

नाट्य कला (Dramatics) और मंचन (Staging) रचनात्मक और मौखिक कौशल के एकीकरण के लिए सर्वोत्तम मंच प्रदान करते हैं। 'नाटक का मंचन' और 'कविता पाठ' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को भाषा का उपयोग केवल शब्दों के रूप में नहीं, बल्कि भाव, लय, ठहराव और शारीरिक अभिव्यक्ति के साथ करने के लिए प्रेरित करती हैं। नाटक छात्रों को संवाद लिखने, चरित्र का विकास करने और दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता प्रदान करता है। यह एक सामूहिक गतिविधि है जो सहयोग, समय प्रबंधन और अभिनय के माध्यम से आत्मविश्वास का निर्माण करती है। यह अभ्यास छात्रों की प्रस्तुति कौशल (Presentation Skills) को भी निखारता है, जो पेशेवर जीवन में अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षण के व्यावसायिक विकास और आत्म-चिंतन (Self-Reflection) के लिए ये गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं। 'बच्चों की गलतियों का विश्लेषण' और 'पाठ्यक्रम का विश्लेषण' जैसी गतिविधियाँ शिक्षकों को शोधकर्ता और निदानकर्ता (Diagnostician) की भूमिका में लाती हैं। 'गलतियों का विश्लेषण' शिक्षकों को यह सिखाता है कि वे छात्रों द्वारा की गई गलतियों के सतही सुधार के बजाय उनके मूल कारण (जैसे प्रथम भाषा का हस्तक्षेप या नियम की अपूर्ण समझ) की पहचान कैसे करें। 'पाठ्यक्रम का विश्लेषण' शिक्षकों को किसी पाठ्यपुस्तक या अध्याय के शैक्षणिक मूल्य, उद्देश्य और उपयुक्त गतिविधियों (इस संग्रह में दी गई 100 गतिविधियों में से चयन) की योजना बनाने में सक्षम बनाता है। यह शिक्षकों को चिंतनशील अभ्यासी बनाता है जो अपने शिक्षण के परिणामों का वैज्ञानिक तरीके से मूल्यांकन कर सकते हैं।

ये गतिविधियाँ डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy) और आधुनिक संचार साधनों के उपयोग को प्रोत्साहित करती हैं। 'पॉडकास्ट बनाना' और 'इंटरनेट संसाधनों का उपयोग' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को 21वीं सदी के संचार साधनों से परिचित कराती हैं। पॉडकास्ट का निर्माण छात्रों को एक लक्षित दर्शक के लिए सामग्री लिखने, उच्चारण और प्रवाह को रिकॉर्ड करने और ध्वनि संपादन जैसे तकनीकी कौशल का उपयोग करने के लिए प्रेरित करता है। यह अभ्यास छात्रों को सिखाता है कि वे अकादमिक विषयों को भी आधुनिक, आकर्षक और इंटरैक्टिव तरीके से कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं।

इन गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक मूल्य मूल्यांकन और सुधार की प्रक्रिया में निहित है। 'प्रतिक्रिया और सुधार' और 'सहकर्मी शिक्षण' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को रचनात्मक आलोचना (Constructive Criticism) देने और प्राप्त करने की कला सिखाती हैं। जब छात्र अपने सहपाठियों की प्रस्तुति या प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया देते हैं, तो उन्हें विनम्र, विशिष्ट और सहायक भाषा का उपयोग करना पड़ता है। 'सहकर्मी शिक्षण' छात्रों को नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाने, किसी विषय-वस्तु में महारत हासिल करने और उस ज्ञान को प्रभावी ढंग से दूसरों तक पहुँचाने का अवसर देता है। यह गतिविधि कक्षा में जिम्मेदारी और स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देती है।

साहित्यिक और कलात्मक अन्वेषण इन गतिविधियों का केंद्रीय विषय है। 'साहित्यिक हस्तियों पर शोध' जैसी गतिविधियाँ छात्रों को भाषा को उसके ऐतिहासिक और बौद्धिक संदर्भ में समझने में मदद करती हैं। यह उन्हें प्रमुख लेखकों, कवियों और उनके सामाजिक योगदान से परिचित कराता है। यह शोध न केवल पढ़ने और लिखने के कौशल को बढ़ाता है, बल्कि छात्रों को साहित्यिक आलोचना और साहित्य के सांस्कृतिक महत्व को समझने की क्षमता भी प्रदान करता है।

समुदाय और सामाजिक जुड़ाव रचनात्मक गतिविधियों का एक स्वाभाविक विस्तार है। 'सांस्कृतिक उत्सव की योजना' जैसी गतिविधि छात्रों को भाषा को केवल कक्षा तक सीमित न रखकर, उसे सामुदायिक स्तर पर ले जाने का अभ्यास कराती है। एक उत्सव की योजना बनाना छात्रों को आयोजन, टीम वर्क, बजट बनाना और समय प्रबंधन जैसे अमूल्य कौशल सिखाता है, साथ ही उन्हें अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व महसूस करने का अवसर देता है।

निष्कर्ष रूप में, रचनात्मक और सांस्कृतिक गतिविधियों का यह खंड भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में आत्मा और उद्देश्य का संचार करता है। यह छात्रों को सिखाता है कि भाषा केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं है, बल्कि सौंदर्य, कला, और पहचान का निर्माण है। 'कठपुतली बनाने' से लेकर 'पाठ्यक्रम विश्लेषण' तक, ये गतिविधियाँ सुनिश्चित करती हैं कि छात्र रचनात्मक, सांस्कृतिक रूप से जागरूक और आलोचनात्मक रूप से संलग्न शिक्षार्थी बनें। यह खंड भाषा को एक जीवंत विरासत के रूप में देखता है जिसका उपयोग व्यक्तिगत और सामूहिक अभिव्यक्ति के लिए किया जाना चाहिए। इन अभ्यासों के माध्यम से, छात्र एक संपूर्ण भाषाई व्यक्तित्व का विकास करते हैं, जो न केवल भाषा में निपुण होता है, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों और अभिव्यक्ति की शक्ति से भी गहराई से जुड़ा होता है।

रचनात्मक और सांस्कृतिक (Creative and Cultural) गतिविधियाँ

81. बाल साहित्य बनाना (Creating Children's Literature): कार्यशाला के लिए सरल कहानियाँ या कविताएँ लिखना।
82. कक्षा सज्जा सामग्री बनाना (Creating Classroom Decor): चार्ट, पोस्टर, फ्लैशकार्ड बनाना।
83. स्थानीय भाषा और मानक भाषा पर चर्चा (Local vs. Standard Language Discussion): दोनों के बीच के संबंध और शिक्षण में उनके उपयोग पर चर्चा।
84. शिक्षण सहायक सामग्री का मूल्यांकन (T-L Material Evaluation): उपलब्ध शिक्षण सामग्री की प्रभावशीलता का विश्लेषण।
85. विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रदर्शन (Demonstration of Methods): प्रत्यक्ष विधि, व्याकरण-अनुवाद विधि, संवादात्मक विधि आदि का प्रदर्शन।
86. गतिविधि बैंक का निर्माण (Activity Bank Creation): अध्यापकों द्वारा गतिविधियों के विचारों का संग्रह करना।
87. नाटक का मंचन (Play Production): किसी छोटी कहानी पर नाटक तैयार करना और प्रस्तुत करना।
88. साहित्यिक हस्तियों पर शोध (Research on Literary Figures): प्रमुख साहित्यकारों के जीवन और कृतियों पर प्रस्तुति।
89. पॉडकास्ट बनाना (Creating a Podcast): भाषा शिक्षण के अनुभवों या किसी विषय पर एक छोटा पॉडकास्ट रिकॉर्ड करना।
90. भाषा खेल बनाना (Creating Language Games): अध्यापकों को स्वयं नए भाषा खेल बनाने के लिए प्रेरित करना।
91. इंटरनेट संसाधनों का उपयोग (Using Internet Resources): भाषा शिक्षण के लिए उपयोगी डिजिटल उपकरणों और वेबसाइटों का पता लगाना।
92. बच्चों की गलतियों का विश्लेषण (Error Analysis): बच्चों की सामान्य भाषाई गलतियों पर चर्चा और उन्हें सुधारने के तरीके खोजना।

93.भाषा पोर्टफोलियो बनाना (Creating a Language Portfolio): सीखने के प्रमाण के रूप में अपने काम का संग्रह करना।

94.पाठ्यक्रम का विश्लेषण (Curriculum Analysis): पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रम की संरचना का विश्लेषण करना।

95.प्रतिक्रिया और सुधार (Feedback and Improvement): एक-दूसरे की गतिविधियों पर रचनात्मक प्रतिक्रिया देना।

96.सांस्कृतिक उत्सव की योजना (Planning a Cultural Event): भाषा से संबंधित किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम की योजना बनाना।

97.लोक कथाओं का अनुवाद (Translating Folk Tales): स्थानीय लोक कथाओं को लक्षित भाषा में अनुवादित करना।

98.शिक्षण उपकरण बनाना (Creating Teaching Aids): कम लागत वाली शिक्षण सामग्री जैसे कठपुतलियाँ या फिंगर पपेट बनाना।

99.सहकर्मी शिक्षण (Peer Teaching): एक अध्यापक द्वारा दूसरे अध्यापक को कोई गतिविधि या पाठ पढ़ाना।

100. 'आज का नया विचार' (Today's New Idea): प्रत्येक अध्यापक द्वारा एक नया शिक्षण विचार साझा करना।

क्र.सं.	**गतिविधि का नाम**	**विवरण (Activity Detail)**	**कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)**
81.	बाल साहित्य बनाना (Creating	यह अध्यापकों को सरल, मनोरंजक और चित्रात्मक भाषा का उपयोग करके बच्चों	कार्य: केवल 50 शब्दों में एक छोटी कहानी लिखें, जिसमें जंगली

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
	Children's Literature)	के स्तर के लिए सामग्री बनाने का अभ्यास करवाती है। समूह में छोटी, नैतिक कहानियाँ या चित्र-आधारित कविताएँ लिखना।	जानवर पात्र हों, और उसका एक नैतिक मूल्य हो।
82.	कक्षा सज्जा सामग्री बनाना (Creating Classroom Decor)	यह गतिविधि कम लागत वाली और सीखने में सहायक शिक्षण सामग्री (TLM) बनाने पर केंद्रित है। अध्यापकों को पुराने कागज़, चार्ट या प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके वर्णमाला चार्ट, वचन-चार्ट या मुहावरे का पोस्टर बनाना होता है।	कार्य: 'विशेषण' पर आधारित एक आकर्षक पॉकेट चार्ट (Pocket Chart) बनाएँ, जिसमें विशेषण और संज्ञा के जोड़े हों।
83.	स्थानीय भाषा और मानक भाषा पर चर्चा (Local vs. Standard	यह भाषा की विविधता को समझने और यह तय करने के लिए है कि कक्षा में स्थानीय बोली को कैसे शामिल किया	चर्चा बिंदु: स्थानीय भाषा (Local Dialect) के वे कौन से 5 शब्द हैं, जो हिंदी की

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
	Language Discussion)	जाए ताकि छात्र सहज महसूस करें।	मानक भाषा (Standard Language) से अलग हैं, और उन्हें कक्षा में कैसे स्वीकार करना चाहिए?
84.	शिक्षण सहायक सामग्री का मूल्यांकन (T-L Material Evaluation)	यह गतिविधि अध्यापकों को उपलब्ध सामग्री की गुणवत्ता और शैक्षिक मूल्य का विश्लेषण करना सिखाती है। अलग-अलग फ्लैशकार्ड, चार्ट या गेम्स दिखाए जाते हैं।	प्रश्न: यह फ्लैशकार्ड व्याकरण सीखने के लिए कितना प्रभावी है? इसे और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है?
85.	विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रदर्शन (Demonstration of Methods)	अध्यापकों के समूह को अलग-अलग शिक्षण विधियों (जैसे प्रत्यक्ष विधि, कहानी विधि, प्रदर्शन विधि) का उपयोग करके एक छोटा पाठ पढ़ाना होता है, और दूसरे	कार्य: 'कारक' को समझाने के लिए 'व्याकरण-अनुवाद विधि' या 'खेल विधि' में से किसी एक का 5 मिनट का प्रदर्शन दें।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		समूह उसका मूल्यांकन करते हैं।	
86.	गतिविधि बैंक का निर्माण (Activity Bank Creation)	यह सहयोग और संसाधन साझाकरण को बढ़ावा देती है। प्रत्येक अध्यापक को किसी एक कौशल (जैसे लेखन या उच्चारण) के लिए 3 नई गतिविधियाँ लिखकर एक साझा रजिस्टर या डिजिटल दस्तावेज़ में जमा करवानी होती हैं।	योगदान: 'लिखावट सुधारने के लिए 3 रचनात्मक अभ्यास' या 'संज्ञा सिखाने के लिए 3 खेल'।
87.	नाटक का मंचन (Play Production)	यह बोलने, सुनने, हाव-भाव, संवाद और रचनात्मकता का एक समग्र अभ्यास है। एक छोटी कहानी या दिया गया संवाद 10-15 मिनट में तैयार करके प्रस्तुत करना।	कार्य: 'लालच बुरी बला है' कहानी पर 5 मिनट का लघु नाटक तैयार करना।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
88.	साहित्यिक हस्तियों पर शोध (Research on Literary Figures)	यह साहित्य और संस्कृति के ज्ञान को बढ़ाती है। अध्यापकों के समूहों को एक लेखक या कवि (जैसे प्रेमचंद, महादेवी वर्मा) दिया जाता है, और उन्हें उस पर संक्षिप्त जानकारी (जीवन और कार्य) तैयार करके प्रस्तुत करनी होती है।	प्रस्तुति के बिंदु: कवि की सबसे प्रसिद्ध रचना, भाषा शैली और समाज को उनका संदेश।
89.	पॉडकास्ट बनाना (Creating a Podcast)	यह श्रवण और मौखिक कौशल का एक आधुनिक अभ्यास है। अध्यापकों को किसी शैक्षिक विषय पर 3-5 मिनट का एक ऑडियो रिकॉर्डिंग (पॉडकास्ट) तैयार करना होता है, जिसमें उनका उच्चारण और विचारों का प्रवाह स्पष्ट हो।	विषय: "माता-पिता बच्चों को घर पर भाषा कैसे सिखा सकते हैं।"

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
90.	भाषा खेल बनाना (Creating Language Games)	यह रचनात्मक समस्या-समाधान का अभ्यास है। अध्यापकों को अपनी कक्षा के छात्रों की उम्र को ध्यान में रखते हुए एक नया भाषा शिक्षण खेल (जैसे कार्ड गेम या बोर्ड गेम) बनाना और उसके नियम लिखने होते हैं।	उदाहरण: एक 'क्रिया बिंगो' या 'विशेषण साँप-सीढ़ी' का खेल बनाना।
91.	इंटरनेट संसाधनों का उपयोग (Using Internet Resources)	यह अध्यापकों को डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy) और ऑनलाइन शिक्षण उपकरणों (Online Tools) से परिचित कराती है। अध्यापकों को भाषा शिक्षण के लिए उपयोगी 5 वेबसाइट या ऐप ढूँढना और उनके उपयोग पर चर्चा करनी होती है।	चर्चा: ऑनलाइन डिक्शनरी, व्याकरण क्विज़ मेकर या बच्चों के लिए इंटरैक्टिव कहानियाँ ढूँढना।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
92.	बच्चों की गलतियों का विश्लेषण (Error Analysis)	यह निदान कौशल (Diagnostic Skill) को बेहतर बनाने पर केंद्रित है। छात्रों द्वारा किए गए वास्तविक भाषाई गलतियों (जैसे लेखन की कॉपी) के नमूने दिखाए जाते हैं। अध्यापकों को यह पता लगाना होता है कि गलती क्यों हुई और इसे ठीक करने के लिए अगली रणनीति क्या होगी।	गलती का विश्लेषण: 'मैने' की जगह 'मैंने' लिखा है। (गलती का कारण: बोलने में सुविधा या कारक का सही ज्ञान न होना)।
93.	भाषा पोर्टफोलियो बनाना (Creating a Language Portfolio)	यह सीखने की प्रक्रिया (Learning Process) को दस्तावेज़ित करने का अभ्यास है। अध्यापकों को कार्यशाला के दौरान किए गए सर्वोत्तम 3 कार्यों को चुनना और यह	पोर्टफोलियो में शामिल: सबसे अच्छी कहानी, सबसे सही व्याकरण शीट, और सबसे रचनात्मक शिक्षण सामग्री।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		समझाना होता है कि इन कार्यों से उन्होंने क्या सीखा।	
94.	पाठ्यक्रम का विश्लेषण (Curriculum Analysis)	यह शैक्षणिक योजना (Academic Planning) के लिए महत्वपूर्ण है। अध्यापकों को किसी कक्षा विशेष की पाठ्यपुस्तक का एक अध्याय दिया जाता है। उन्हें विश्लेषण करना होता है कि उस अध्याय को पढ़ाने के लिए कितने दिन लगेंगे और कौन सी गतिविधियाँ (100 में से) उपयोगी होंगी।	विश्लेषण: इस पाठ में कौन से व्याकरण के बिंदु हैं, और इसे पढ़ने से बच्चों में कौन सा कौशल (पढ़ना/लिखना) विकसित होगा।
95.	प्रतिक्रिया और सुधार (Feedback and Improvement)	यह रचनात्मक आलोचना (Constructive Criticism) और आत्म-सुधार को बढ़ावा देती है। एक अध्यापक किसी गतिविधि (जैसे रोल-प्ले या	प्रतिक्रिया के बिंदु: "उच्चारण बहुत स्पष्ट था, पर व्याकरण में थोड़ी गलती थी।" या "आपकी प्रस्तुति में

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		प्रस्तुति) का प्रदर्शन करता है, और बाकी अध्यापक सकारात्मक और सुधार-योग्य दोनों तरह की प्रतिक्रिया देते हैं।	आत्मविश्वास की कमी थी।"
96.	सांस्कृतिक उत्सव की योजना (Planning a Cultural Event)	यह भाषा को संस्कृति से जोड़ने का अभ्यास है। समूह में किसी भाषा या साहित्य से जुड़े सांस्कृतिक उत्सव (जैसे हिंदी दिवस, मातृभाषा दिवस) की योजना बनाना।	योजना: उत्सव का थीम, मुख्य अतिथि, और बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले 3 सांस्कृतिक कार्यक्रम।
97.	लोक कथाओं का अनुवाद (Translating Folk Tales)	यह अनुवाद कौशल और सांस्कृतिक समझ को गहरा करने के लिए है। अध्यापकों को अपनी स्थानीय भाषा की एक छोटी लोक कथा को लक्षित भाषा (हिंदी) में	ध्यान देने योग्य बात: मुहावरों और सांस्कृतिक शब्दों का अनुवाद कैसे किया गया।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
		स्वाभाविक तरीके से अनुवादित करना होता है।	
98.	शिक्षण उपकरण बनाना (Creating Teaching Aids)	यह दृश्य-श्रव्य सामग्री बनाने का व्यावहारिक अभ्यास है। अध्यापकों को कठपुतलियाँ (Puppets) या उंगलियों के पपेट बनाकर उनका उपयोग करके एक छोटा संवाद या कहानी प्रस्तुत करनी होती है।	सामग्री का उपयोग: 'संज्ञा के प्रकार' को समझाने के लिए कठपुतलियों का उपयोग।
99.	सहकर्मी शिक्षण (Peer Teaching)	यह अध्यापकों को नेतृत्व कौशल (Leadership) और शिक्षण की नई तकनीकें सीखने का अवसर देती है। एक अध्यापक समूह किसी सीखी हुई तकनीक (जैसे 'ब्लूम टैक्सोनॉमी') का उपयोग करके दूसरे समूह को 10 मिनट का एक मिनी-पाठ पढ़ाता है।	कार्य: किसी एक व्याकरण बिंदु को किसी नए और इंटरैक्टिव तरीके से पढ़ाना।

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	विवरण (Activity Detail)	कार्यशाला में उदाहरण (Workshop Example)
100.	'आज का नया विचार' (Today's New Idea)	कार्यशाला के समापन पर, प्रत्येक अध्यापक को यह साझा करना होता है कि उसने सबसे प्रभावी नया शिक्षण विचार कौन सा सीखा, और वह कल से उसे अपनी कक्षा में कैसे लागू करेगा।	विचार साझाकरण: "मैंने सीखा कि पहेलियों का उपयोग करके विशेषण को मजेदार तरीके से पढ़ाया जा सकता है।"

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त' के बारे में



'उरतृप्त' उपनाम से व्यंग्य जगत में प्रसिद्ध डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा अपनी भावनाओं और विचारों को अत्यंत ईमानदारी और गहराई से अभिव्यक्त करते हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण उनके लेखन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान से मिलता है। वे न केवल एक प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं, बल्कि एक कवि और बाल साहित्य लेखक भी हैं। उनके व्यंग्य लेखन ने उन्हें एक विशेष पहचान दिलाई है। उनका व्यंग्य 'शिक्षक की मौत' साहित्य आजतक चैनल पर अत्यधिक वायरल हुआ, जिसे लगभग दस लाख से अधिक बार पढ़ा और देखा गया, जो हिंदी व्यंग्य के इतिहास में एक अभूतपूर्व कीर्तिमान है। उनका व्यंग्य-संग्रह 'एक तिनका इक्यावन आँखें' भी काफी प्रसिद्ध है, जिसमें उनकी कालजयी रचना 'किताबों की अंतिम यात्रा' शामिल है। इसके अतिरिक्त 'म्यान एक, तलवार अनेक', 'गपोड़ी अड्डा', 'सब रंग में मेरे रंग' भी उनके प्रसिद्ध व्यंग्य संग्रह हैं। 'इधर-उधर के बीच में' तीसरी दुनिया को लेकर लिखा गया अपनी तरह का पहला और अनोखा व्यंग्य उपन्यास है। साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान को तेलंगाना हिंदी अकादमी, तेलंगाना सरकार द्वारा श्रेष्ठ नवयुवा रचनाकार सम्मान, 2021 (मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के हाथों) से सम्मानित किया गया है। राजस्थान बाल साहित्य अकादमी के द्वारा उनकी बाल साहित्य पुस्तक 'नन्हों का सृजन आसमान' के लिए उन्हें सम्मानित किया गया है। इनके अलावा, उन्हें व्यंग्य यात्रा रवींद्रनाथ त्यागी सोपान सम्मान और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों साहित्य सृजन सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। डॉ. उरतृप्त ने तेलंगाना सरकार के लिए प्राथमिक स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर कुल 55 पुस्तकों को लिखने, संपादन करने और समन्वय करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बिहार, छत्तीसगढ़, तेलंगाना की विश्वविद्यालयी पाठ्य पुस्तकों में उनके योगदान को रेखांकित किया गया है। कई पाठ्यक्रमों में उनकी व्यंग्य रचनाओं को स्थान दिया गया है। उनका यह सम्मान दर्शाता है कि युवा पाठक गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी लेखन की पहचान कर सकते हैं।